ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : ११
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०९)
१ मई २०१० मूल्य : रु. ६-००
अधिक वैशाख-ज्येष्ठ वि.सं. २०६७

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में
(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक : रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

जिसने सब दिया, उसके लिए क्या किया ?

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

मनुष्य जब माँ के गर्भ में होता है तो प्रार्थना करता है कि 'हे प्रभु ! तू मुझे इस दुःखद स्थिति से बाहर निकाल ले, मैं तेरा भजन करूँगा । वक्त व्यर्थ नहीं बिताऊँगा, तेरा भजन करके अपना जीवन सार्थक करूँगा ।' यह वादा करके गर्भ से बाहर आता है । बाहर आते ही अपना वादा भूल जाता है और भगवान का भजन न करके सांसारिक कार्यों में इतना तो उलझ जाता है कि जिस प्रभु ने सब कुछ दिया, उसके सुमिरन के लिए भी वह समय नहीं निकाल पाता । इसी बात की याद दिलाते हुए संत कबीरजी ने कहा है :

कबीर वा दिन याद कर, पग ऊपर तल सीस।
मृत मंडल में आयके, बिसरि गया जगदीस॥

क्या आपने कभी सोचा है कि हमने माँ के गर्भ से जन्म लिया, माँ दाल-रोटी खाती है, सब्जी-रोटी खाती है उसमें से हमारे लिए जिसने दूध बनाया, उसको हमने क्या दिया ? जिसने रहने को धरती दी और धरती से अन्न दे रहा है, उसका हमने बदला क्या चुकाया ? चौबीसों घण्टे जो हमारे प्राण चलाने के लिए वायु दे रहा है, उसके बदले में हमने क्या दिया ? जिस धरती पर हम रहते हैं, उसी पर गंदगी छोड़ते हैं; साफ पानी पीते हैं, गंदा करके निकालते रहते हैं, फिर भी जो शुद्ध पानी दिये जा रहा है उसको हमने बदले में क्या दिया ? जरा-सी लाइट जलाते हैं तो बिजली का बिल भरना पड़ता है, नहीं तो कनेक्शन कट जाता है । जिसके सूर्य की लाइट, चन्द्रमा की लाइट जन्म से लेकर अभी तक ले रहे हैं, उसे बदले में हमने क्या दिया ?

कुम्हार ईंट बनाता है लेकिन ईंट बनाने की सामग्री - मिट्टी, पानी, अग्नि कुम्हार ने नहीं बनायी । अग्नि, मिट्टी, पानी भी भगवान का, जिस धरती पर ईंट बनायी वह भी भगवान की और जिन हाथों से बनायी उनमें भी शक्ति भगवान की, फिर भी कुम्हार से ईंट लेते हो तो उसका पैसा देना पड़ता है । जरा-सा दूध लेते हो तो पैसा देना पड़ता है । जिसकी घास है और गाय, भैंस आदि में जो दूध बनाता है, उस परमात्मा की करुणा, प्राणिमात्र के लिए सुहृदता कैसी सुखद है ! कैसा दयालु, कृपालु, हितैषी है वह !!

...तो जिसकी मिट्टी है, अग्नि है, पानी है, जो हमारे दिल की धड़कनें चला रहा है, आँखों को देखने की, कानों को सुनने की, मन को सोचने की, बुद्धि को निर्णय करने की शक्ति दे रहा है, निर्णय बदल जाते हैं फिर भी जो बदले हुए निर्णय को जानने का ज्ञान दे रहा है, वह परमात्मा हमारा है । मरने के बाद भी वह हमारे साथ रहता है, उसके लिए हमने क्या किया ? उसको हम कुछ नहीं दे सकते ? प्रीतिपूर्वक स्मरण करते-करते प्रेममय नहीं हो सकते ? बेवफा, गुणचोर होने के बदले शुक्रगुजारी और स्नेहपूर्वक स्मरण क्या अधिक कल्याणकारी नहीं होगा ? हे बेवकूफ मानव ! हे गुणचोर मनवा !! सो क्यों बिसारा जिसने सब दिया ? जिसने गर्भ में रक्षा की, सब कुछ दिया, सब कुछ किया, भर जा धन्यवाद से, अहोभाव से उसके प्रीतिपूर्वक स्मरण में !

जिसका तू बंदा उसीका सँवारा ।
दुनिया की लालच से साहिब बिसारा ॥

न कीन्ही इबादत न राखा ईमान ।
न कीन्ही बंदगी न लिया प्रभु का नाम ॥
शर्मिंदा हो न कछु नेकी कमायी ।
लानत का जामा पहना न जायी ॥
करेगा जो गफलत तो खायेगा लात ।
बेटी और बेटा रहेगा न साथ ॥
दुनिया का दीवाना कहे मुल्क मेरा ।
आयी मौत सिर पर न तेरा न मेरा ॥

तो लग जाओ लाला ! लालियाँ !! भगवान के द्वार जब जाओगे तब पूछा जायेगा कि 'भजन करने का वादा करके गया था, क्या करके आया ? इतना-इतना जल, इतनी पृथ्वी, इतना माँ का दूध, इतनी वायु, इतना भोजन आदि सब कुछ मिला, बदले में तूने कितना भजन किया ? संतों का कितना संग किया, कितना सत्संग सुना ? संतों द्वारा बताये मार्ग पर कितना चला और दूसरों को चलने में कितनी मदद की ? भगवन्नाम का कितना जप-कीर्तन किया और दूसरे कितनों को इसकी महिमा बताकर जप-कीर्तन में लगाया ? गीता के ज्ञान से, संतों के अनुभव से सम्पन्न सत्साहित्य को कितनों तक पहुँचाया ?' तो क्या जवाब दोगे ?

पैसा तो तुमने कमाया लेकिन भगवान भूख नहीं देते तो कैसे खाते ? भूख ईश्वर की चीज है । खाना तो तुमने खाया परंतु पचाने की शक्ति, भोजन में से खून बनाने की शक्ति ईश्वर की है । सोचो, बदले में तुमने ईश्वर को क्या दिया ?

कम-से-कम सुबह उठते समय, रात्रि को सोते समय प्रीतिपूर्वक भगवान से कह दो : 'हे प्रभो ! आपको प्रणाम है । आप हमारे हैं । हे दाता ! कृपा करो, हमें अपनी प्रीति दो, भक्ति दो । हे प्रभो ! आपकी जय हो । हम आपके सूर्य का, हवा का, धरती का, जल का फायदा लेते हैं और धन्यवाद भी नहीं देते, फिर भी आप देते जाते हो । हे दाता ! यह आपकी दया है । प्रभु ! आपकी जय हो !'

प्रभु को बोलो : 'प्रभु ! आप हमारे हो । हम चाहे आपको जानें चाहे न जानें, मानें चाहे नहीं मानें फिर भी आप हमारी रक्षा करते हो । आप हमको सद्बुद्धि देते हो । दुःख देकर संसार की आसक्ति मिटाते हो और सुख देकर संसार में सेवा का भाव सिखाते हो । अब तो हम आपकी भक्ति करेंगे ।'

इस प्रकार भगवान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते-करते भक्ति का रंग लग जायेगा । आपके दोनों हाथों में लड्डू हो जायेंगे, एक तो कृतघ्नता के दोष से बच जाओगे, दूसरा भगवान की भक्ति मिल जायेगी । भगवान की भक्ति मिली तो सब मिल गया ।

अरे, व्यवहार में एक गिलास पानी देनेवाले को भी धन्यवाद देते हैं तो जो सब कुछ दे रहा है, उसके प्रति यदि हम कृतज्ञ नहीं होंगे तो हम गुणचोर कहे जायेंगे । 'रामायण' में आता है :

बड़ें भाग मानुष तनु पावा ।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥

'बड़े भाग्य से यह मनुष्य-शरीर मिला है । सब ग्रंथों ने यही कहा है कि यह शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है ।' **(श्री रामचरित. उ.कां. : ४२.४)**

ऐसा अमूल्य मानव-तन पाकर भगवान की भक्ति नहीं की तो क्या किया आपने ?

कथा-कीर्तन जा घर नहीं, संत नहीं मेहमान ।
वा घर जमड़ा डेरा दीन्हा, सांझ पड़े समशान ॥

जिस गाँव में पिछले पाँच-पचीस वर्षों से कथा-कीर्तन, ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का सत्संग नहीं हुआ हो, उनका साहित्य नहीं पहुँचा हो उस गाँव के लोग पिशाचों जैसे खड़े-खड़े खाते हैं, खड़े-खड़े पीते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं, टोना-टोटका करते हैं, भूत-पिशाच को मानते हैं, सट्टा, जुआ, शराब-कबाब में तबाह होते हैं; भगवान को भूलकर, मानव-जीवन के उद्देश्य को भूलकर परेशान होते रहते हैं । जिन गाँवों में सत्संग नहीं होता, उन गाँवों के लोगों को इतनी अक्ल भी नहीं रहती कि हम बेवफा हो रहे हैं । **(शेष पृष्ठ ७ पर)**

ठग सुक्खा सलाखों के पीछे

कहते हैं : '**विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।**'

जब गीदड़ की मौत आती है तब वह शहर की ओर भागता है। ऐसा ही हुआ ठग सुखाराम के साथ जिसने पूज्य बापूजी जैसे महान, पवित्र, ब्रह्मज्ञानी संत को बदनाम करने की साजिश की। शायद उसे यह पता नहीं था कि

संत सताये तीनों जायें, तेज, बल और वंश।
ऐसे ऐसे कई गये, रावण कौरव और कंस ॥

इसीसे उसकी बुद्धि विपरीत हो गयी और उसने सीधा अतिरिक्त जिला कलेक्टर को ही ठगने की योजना बना ली। यह भी नहीं सोचा कि यदि मैं पकड़ा गया तो क्या होगा ?

ठगी व धोखाधड़ी के कई मामलों में लिप्त इस कुख्यात ठग सुक्खा उर्फ तांत्रिक सुखाराम उर्फ ऑस्ट्रेलियन बाबा उर्फ प्रीस्ट सुखविंदर सिंह उर्फ हरविंदर सिंह को आखिरकार पुलिस ने चार सौ बीसी के मामले में गिरफ्तार कर ही लिया व न्यायालय ने उसे रिमांड में भेज दिया है। ऐसे शातिर दिमागवाले अपराधी के बेबुनियाद आरोपों को उछालनेवाले कुछ स्वार्थी इलेक्ट्रॉनिक मीडियावाले असलियत सामने आने पर अब चुप्पी साधके बैठे हैं।

क्या था मामला ?

उदयपुर के अतिरिक्त जिला कलेक्टर (ए.डी.एम.) एवं राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री माँगीलाल चौहान की माँ वैष्णोदेवी तीर्थस्थल में लापता हुईं। उन्हें तलाश लाने का दावा करते हुए तांत्रिक सुक्खा डेढ़ लाख रुपये की ठगी कर गायब हो गया। पिछले दिनों तांत्रिक सुखाराम ने पूज्य बापूजी के बारे में कुछ टी.वी. चैनलों पर फिर से टिप्पणी की थी। वह प्रसारण जब चौहान ने देखा तो वे बोल उठे : **''अरे ! यह तो वही तांत्रिक सुक्खा है, जिसने हमें ठगा है।''** उनके भाई राजेश चौहान द्वारा तुरंत सुक्खा के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज करवायी गयी।

शिकायत में लिखा गया है...

''इंदौर आ जाना, मैं तुम्हें तुम्हारी माँ के साक्षात् दर्शन करवा दूँगा।'' ऐसा झूठा आश्वासन देकर सुखाराम ने मुझे इंदौर बुलाया। रात्रि करीब डेढ़ बजे एक पुलिस सब इंस्पेक्टर एवं अन्य साथी मुझे एक मारुति कार में बिठाकर देवास श्मशान तक ले गये। वहाँ सुखाराम ने श्मशान में जलते अंगारों पर शराब एवं अन्य सामग्री से तांत्रिक क्रिया की। वापसी में एक बहती नदी पर गाड़ी रोककर मुझे एक कपड़े में लपेटी हुई वस्तु दी और कहा : ''ऐसा बोलकर फेंक देना कि **जाओ कालू ! मेरी माँ का पता लगाकर आओ।''** मैंने ऐसा ही किया। वस्तु पानी में गिरते ही दो विस्फोट हुए। फिर सुक्खा ने कहा कि ''मैं तुम्हारी माँ को ढूँढ़ने वैष्णोदेवी जाऊँगा, मुझे पैसे दो।'' इस प्रकार कुल डेढ़ लाख रुपये की ठगी करके वह गायब हो गया और मोबाईल भी बंद कर दिया। काफी प्रयास के बाद भी हमारा सुक्खा से सम्पर्क नहीं हो पाया।

कैसे दबोचा इस शातिर ठग को ?

उदयपुर पुलिस दल ने सादे वस्त्रों में जाकर सुक्खा के देवास (म.प्र.) स्थित अड्डे की छानबीन की। वहाँ पता चला कि पिछले छः महीनों से उसने अपना अड्डा बदल दिया है और वह इंदौर से २७ कि.मी. दूर अरनिया कुंड, खुड़ैल में रह रहा है। पुलिस दल वहाँ पहुँचा तो उसने उसके अड्डे में तांत्रिक गतिविधियाँ देखीं। २७ अप्रैल को वहाँ छापा मारकर ठग कुकर्मी सुक्खा को दबोचा गया। प्रतापनगर (उदयपुर) थाना प्रभारी ने बताया कि रिमांड अवधि में **सुखाराम से अन्य ठगी के मामलों के बारे में भी पता लगाया जायेगा।** ➡

आश्रम में नहीं होता है काला जादू - सी.आई.डी.

गुजरात सी.आई.डी. के डिटेक्टिव पुलिस इन्स्पेक्टर पी.एम. परमार ने ६ अप्रैल २०१० को एक विस्तृत रिपोर्ट गुजरात उच्च न्यायालय में पेश की, जिसमें उन्होंने आश्रम को तंत्रविद्या व काला जादू के आरोप में क्लीन चिट दे दी है।

सी.आई.डी. के शपथपत्र में स्पष्ट लिखा गया है कि ''सी.आई.डी. के उच्च अधिकारियों के एक बड़े दल के द्वारा आश्रम के साधकों तथा गुरुकुल में अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों से पूछताछ की गयी तथा उनके बयान लिये गये। आश्रम-परिसर के प्रत्येक स्थल तथा कमरों का सघन निरीक्षण कर विडियोग्राफी तथा फोटोग्राफी की गयी परंतु तांत्रिक विद्या से संबंधित कोई भी सामग्री नहीं मिली। साथ ही, तांत्रिक विधि का कोई भी प्रमाण नहीं मिला।

जाँच अधिकारी द्वारा धारा १६० के अंतर्गत विभिन्न अखबारों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों को उनके पास उपलब्ध जानकारी इकट्ठी करने के लिए सम्मन्स दिये गये थे, परंतु किसीने भी उसका अनुसरण नहीं किया। 'सूचना एवं प्रसारण विभाग, गांधीनगर' द्वारा अखबार में प्रेसनोट भी दिया गया था कि किसीको भी आश्रम की किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधियों या घटना के बारे में पता हो तो वह आकर जाँच अधिकारी को बताये। यह भी स्पष्ट किया गया था कि जानकारी देनेवाले उस व्यक्ति को पुरस्कृत किया जायेगा एवं उसका नाम गुप्त रखा जायेगा। तब भी कोई भी व्यक्ति सामने नहीं आया।''

उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री बी.एम. गुप्ता ने कहा : ''अभी तक जितने भी गवाहों ने न्यायाधीश डी.के. त्रिवेदी जाँच आयोग में बयान दिये, उन सभीने बयान में कहा है कि उन्होंने कभी भी आश्रम में तंत्रविद्या होते हुए नहीं देखा है।''

कई वर्षों तक जो आश्रम में रहे और अपनी मलिन मुराद पूरी न होते देखकर आश्रम से भाग गये या जो निकाल दिये गये, उन लोगों ने कुप्रचारवालों के हथकंडे बनकर झूठे आरोप लगाये। उन्हें भी आखिर स्वीकार करना पड़ा कि उन्होंने कभी आश्रम में तंत्रविद्या होते हुए नहीं देखा है। **सत्यमेव जयते।**

हिन्दू धर्म का सुंदर प्रचार करनेवाली संस्था को निशाना बनाये हुए लोगों ने करोड़ों रुपये लगाये हैं और लगायेंगे। झूठे आरोप और कहानियाँ बनानेवाले अखबार, बिकाऊ चैनल व ऐसे भगोड़े लोग चुप नहीं बैठेंगे हमें पता है। हम तो चाहते हैं वे सुधर जायें, भगवान उनको सद्बुद्धि दें; नहीं तो प्रकृति का कोप साधकों पर अत्याचार कर रहे षड्यंत्रकारियों पर जरूर बरसेगा। कइयों पर तो प्रकृति का प्रकोप बरस ही रहा है, बाकी लोग सुधर जायें, सँभल जायें तो अच्छा है।

- डॉ. प्रेमजी मकवाणा (एम.बी.बी.एस.)
(आश्रम में २९ साल से समर्पित साधक) ❐

खुल रहे हैं सुक्खा के धोखाधड़ी के कई और मामले...

हाल ही में गुरुद्वारा श्री गुरुनानक दरबार, जवाहरनगर, जयपुर (राज.) के तत्कालीन सचिव प्रीतपाल सिंह ने उनके बेटे व भतीजे को ऑस्ट्रेलिया में नौकरी दिलाने का झाँसा देकर ६० हजार रु. ठगने के मामले में सुक्खा के खिलाफ पुलिस में एफआईआर दर्ज करवायी है। एक अन्य मामले में सुक्खा ने रायकुण्डा, जि. इंदौर की आदिवासी महिला सीताबाई के पुत्र की शराब की लत छुड़ाने के बहाने २० हजार रु. की ठगी की और सुक्खा की साथी महिलाओं ने सीताबाई को गाली-गलौज, मारपीट की व हाथ-पैर तुड़वा देने की धमकियाँ दीं। इसकी शिकायत इंदौर पुलिस में दर्ज करायी गयी है।

इतने वर्षों से लोगों से ठगी करनेवाला यह शातिर आज तक पुलिस की गिरफ्त में नहीं आया था पर संत को सताने, उनकी बदनामी करने का फल प्रकृति ने इस ठग को दे ही दिया। ❐

शातिर दिमाग के कुछ स्वार्थी, उपद्रवी लोगों ने मीडिया में आश्रम के बारे में झूठी अफवाहें, बेसिर-पैर की बातें, अनर्गल आरोप लगाके आश्रम को बदनाम व समाज को गुमराह करने में एड़ी-चोटी एक कर दी। नदी में दो बच्चों की आकस्मिक मृत्यु के संदर्भ में जुलाई २००८ से जाँच कर रहे न्यायाधीश श्री डी. के. त्रिवेदी आयोग के सामने भी उन्होंने बनावटी किस्से-कहानियाँ बनाकर आश्रम पर मनगढ़ंत आरोप लगाये। उनके बयानों की जाँच करने के लिए गुजरात उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री बी. एम. गुप्ता ने उन्हें आयोग के समक्ष दुबारा बुलवाया और उनसे विशेष पूछताछ की। इसमें इन कुप्रचारकों ने खुद के द्वारा लगाये गये आरोपों की पोल स्वयं अपने ही मुँह से उगली तथा वास्तविकता को स्वीकार किया।

आश्रम से निकाले गये वैद्य अमृत गुलाबचंद प्रजापति ने मीडिया में आरोप लगाया था कि आश्रम में तंत्रविद्या होती है। १३-३-२०१० को ६ घंटे तक चली विशेष पूछताछ में इसने स्वीकार करते हुए कहा : ''**मुझे तांत्रिक विधि के बारे में कोई जानकारी नहीं है। तंत्रविद्या क्या है ? तंत्रविद्या किस प्रकार होती है ? इस बारे में मैंने कोई जाँच नहीं की है। मैं जितना समय आसारामजी के आश्रम में रहा हूँ, वहाँ मैंने तंत्रविद्या होते हुए देखा नहीं है। यह बात सत्य है कि मैंने जब से आश्रम छोड़ा तब से ही तांत्रिक विधि की बात कही है।**

दीपेश व अभिषेक की मृत्यु की घटना के विषय में मुझे कोई भी व्यक्तिगत जानकारी नहीं है।''

८ अगस्त २००८ को एक फैक्स के माध्यम से पूज्य बापूजी को जान से मारने की धमकी दी गयी थी तथा बापूजी से ५० करोड़ रुपये की फिरौती माँगी गयी थी। एक सप्ताह में फिरौती न देने पर पूज्य बापूजी व नारायण साँईं को तंत्रविद्या के, जमीनों के, लड़कियों के तथा अन्य फर्जी केसों में फँसाने की धमकी दी गयी थी। इस फैक्स के संदर्भ में अमृत वैद्य ने स्वीकार किया कि ''**इसमें जो मोबाईल नम्बर और लैंडलाइन नम्बर लिखे हैं, वे मेरे ही हैं।** इस फैक्स में जो नाम लिखे हैं - दिनेश भागचंदानी-अहमदाबाद, शेखर-दिल्ली, महेन्द्र चावला-पानीपत, राजू चांडक-साबरमती, शकील अहमद तथा के. पटेल - इनको मैं पहचानता हूँ।''

इस फैक्स के अनुसार फिरौती न मिलने पर पूर्व-योजना के अनुसार अमृत प्रजापति ने सप्ताह भर में ही एक बुरकेवाली औरत को मीडिया के सामने पेश कर बापूजी पर झूठे आरोप लगवाने का नीच कर्म किया था। इस बारे में प्रश्न पूछे जाने पर उसने असलियत स्वीकार करते हुए कहा : ''मैंने व मेरी पत्नी ने पत्रकारों को बापू के खिलाफ बयान दिये हैं। इस हेतु **मैंने मेरी पत्नी को स्वयं अपने हाथों से बुरका पहनाया और पत्रकारों के सामने पेश किया।** पत्रकारों के द्वारा उसका फोटो लिया गया। **मेरी पत्नी दिल्ली की है, उसका नाम सरोज है।''**

१७-१०-०८ को सूरत के रांदेर पुलिस थाने में भी उसने उपरोक्त बात स्वीकार की थी। जबकि बुरकेवाली को मीडिया के समक्ष पेश करते समय कपटमूर्ति अमृत ने झूठ बोला था कि ''**यह पंजाब से आयी है व मैं इसे नहीं जानता हूँ।''**

नवम्बर २००८ में पूज्य बापूजी के बड़ौदा सत्संग-कार्यक्रम में विघ्न डालने की नाकाम कोशिश करनेवाले सत्संगविरोधी अमृत वैद्य ने पूछताछ में स्वीकार किया : ''यह बात सत्य है कि

जब बड़ौदा में आसारामजी के सत्संग-कार्यक्रम की तारीख निश्चित हुई, तब मैंने उसका विरोध किया और इसीसे पुलिस ने मुझे गिरफ्तार कर लिया।''

अमृत ने यह भी कबूल किया कि २०-८-०८ को वह तथा राजू चांडक (राजू लम्बू) अहमदाबाद में बिजलीघर के पास एक गेस्ट हाऊस में काले कपड़े, काले जादूवाले तथाकथित 'औघड़' ठग सुखाराम से मिले थे तथा इस मुलाकात के पूर्व उसकी सुखाराम व राजू चांडक से फोन पर अनेकों बार बातचीत भी हुई थी। राजू चांडक ने स्टिंग ऑपरेशन में स्वीकार किया था कि ४० हजार रुपये, शराब की बोतलें एवं कुकर्म के लिए बाजारू लड़कियाँ देकर बापू पर आरोप लगाने के लिए हमने ठग सुखाराम को खरीदा था । इन तीनों की गोपनीय गोष्ठी के पाँच दिन बाद ही २६-८-२००८ को ठग सुखाराम ने पूज्य बापूजी पर आरोप लगाये थे ।

अमृत वैद्य को आश्रम से निकालते समय (दिनांक ९-२-०५) की एक वीडियो सी.डी. जाँच आयोग के समक्ष प्रस्तुत की गयी। सी.डी. में अमृत वैद्य ने उसके द्वारा आश्रम के नियमों को भंग किये जाने की बात स्वयं ही कबूल की थी। अमृत वैद्य ने साधुताई के कपड़े उतारकर पैंट-शर्ट स्वयं अपने हाथों से पहने थे। सी.डी. देखकर चकित हुए न्यायाधीश श्री डी. के. त्रिवेदी ने जब अमृत से पूछा कि '**'क्या यह तुम ही हो ?**'' तो अमृत ने लज्जित होते हुए गर्दन झुकाकर जवाब दिया : '**'हाँ साहब ! यह मैं ही हूँ ।**'' अंत में सच का सामना करते हुए मजबूर, दुष्कर्मी अमृत ने स्वीकार किया : ''यह सी.डी. मैंने अभी देखी। मुझे आश्रम से निकाल दिया गया था यह हकीकत है, सत्य है।''

उल्लेखनीय है कि बड़ौदा में पीएच.डी. कर रहा एक नवयुवक हरिकृष्ण ठक्कर अप्रैल २००९ में इस अमृत वैद्य की लापरवाही व गलत इलाज से मर गया बेचारा ! अमृत वैद्य आखिर विष वैद्य साबित हुआ ! अपनी नेम प्लेट पर बिना प्रमाणपत्र के ही **'एम.डी.'** लिखकर लोगों को ठगनेवाले इस वैद्य ने पत्रकारों के समक्ष स्वयं माना कि उसने किसी भी विश्वविद्यालय से एम.डी. नहीं की है। अपने को चरक (प्रसिद्ध आयुर्वेदिक दवा कम्पनी) का मान्यताप्राप्त कन्सलटैंट बताकर लोगों से पैसे ऐंठनेवाले अमृत के बारे में चरक कम्पनी के प्रबंधक ने पत्रकारों को बताया कि अमृत प्रजापति को हम बहुत पहले ही निकाल चुके हैं । हमारी कम्पनी का उससे किसी प्रकार का कोई भी संबंध नहीं है ।

आखिर धूर्त अमृत वैद्य का सच सामने आ ही गया। ऐसे कुप्रचारक सच्चाई सामने आने पर अब चौतरफा बरस रही लानत के पात्र बन रहे हैं। खबरें और भी हैं। अन्य षड्यंत्रकारियों के काले कारनामों की पोल खुलेगी आगामी अंकों में क्रमशः । ❒

(पृष्ठ ३ से 'जिसने सब दिया, उसके लिए क्या किया ?' का शेष)

इसलिए हर घर में प्रतिदिन सत्संग, जप, ध्यान, सत्शास्त्रों का पठन, कथा-कीर्तन होना ही चाहिए।

कथा-कीर्तन जा घर भयो, संत भये मेहमान ।
वा घर प्रभु वासा कीन्हा, वो घर वैकुंठ समान ॥

जो लोग भगवान के नाम की दीक्षा लेते हैं, भगवान के नाम का जप और ध्यान करते हैं, वे तो देर-सवेर भगवान के चिंतन से भगवान के धाम में, स्वर्ग में अथवा ब्रह्मलोक में जाते हैं और जो उनसे भी तीव्र हैं वे तो यहीं ईश्वर का साक्षात्कार कर लेते हैं। अतः आप आज से ही कोई-न-कोई पवित्र संकल्प कर लें कि 'जिस प्रभु ने हमको सब कुछ दिया उसकी प्रीति के लिए, उसको पाने के लिए सत्संग अवश्य सुनूँगा और कम-से-कम इतनी माला तो अवश्य ही करूँगा, प्रभु के चिंतन में इतनी देर मौन रहूँगा, इतनी देर सेवाकार्य करूँगा। प्रभु के हर विधान को मंगलमय समझकर हर व्यक्ति-वस्तु-परिस्थिति में उनका दीदार करूँगा।' ❒
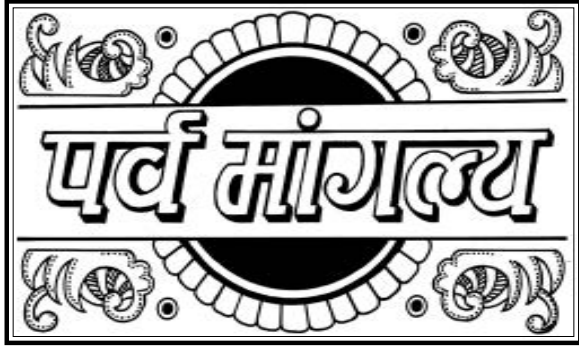
पुण्यसलिला गंगाजी का अवतरण

(श्री गंगा जयंती : २० मई)

(श्री गंगा दशहरा : १३ से २१ जून)

'श्रीमद् वाल्मीकि रामायण' में आता है कि गंगाजी हिमालय की कन्या हैं । देवताओं ने किसी कार्यवश हिमालय पर्वत के निकट गंगाजी को भिक्षा में ले लिया था, तभी से ये ब्रह्माजी के कमंडलु में रहने लगीं । कपिल मुनि के शाप से सगर राजा के पुत्र भस्म हो जाने के कारण सगर वंश के राजा पवित्र गंगाजी को पृथ्वी पर लाने की चेष्टा करने लगे किंतु वे निष्फल हुए । बहुत दिनों बाद सगर वंशज राजा भगीरथ अपने मंत्रियों को राज्यभार सौंपकर ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिए तपस्या करने लगे । कठोर तपस्या करते हुए जब हजार वर्ष बीत गये तब ब्रह्माजी संतुष्ट हुए । ब्रह्माजी सब देवताओं को साथ लेकर राजा भगीरथ के पास पहुँचे । भगीरथ ने ब्रह्माजी के समक्ष अपना अभिप्राय प्रकट किया कि गंगाजी को पृथ्वी पर लाने से उनके पूर्वपुरुष सद्गति पा जायेंगे ।

भगवान शंकर गंगाजी के वेग को धारण करें इस हेतु राजा भगीरथ ब्रह्माजी की आज्ञा से एक वर्ष तक शिवजी की उपासना में लगे रहे । शिवजी उनकी तपस्या से संतुष्ट होकर प्रकट हुए और गंगाजी को अपने ऊपर धारण करने का भार ले लिया । यथासमय गंगाजी स्वर्ग से शिवजी के मस्तक पर पतित हुईं । उनकी धारा भगवान शंकर की जटा के मध्य में ही रुक गयी । भगीरथ गंगाजी को न देखकर पुनः तपस्या करने लगे । उनकी तपस्या से संतुष्ट होकर भूतपति ने गंगाजी को छोड़ दिया और वे बिन्दु सरोवर में गिर गयीं । बिन्दु सरोवर में गिरने से गंगाजी की सात धाराएँ हो गयीं । ह्लादिनी, पावनी और नलिनी ये तीनों पूर्व की ओर व सुचक्षु, सीता और सिंधु नामक महानदी ये तीनों पश्चिम की ओर तथा एक धारा भगीरथ के पथ का अनुसरण करने लगी । इसी कारण इनका नाम 'भागीरथी' पड़ा ।

गंगाजी का एक नाम 'जाह्नवी' है । महाराज भगीरथ रथ पर चढ़कर आगे-आगे चलने लगे । स्रोतवती गंगाजी ने भी ग्राम, नगर, वन, उपवन आदि से होते हुए उन्हींके पीछे-पीछे प्रबल वेग से गमन किया । महामुनि जह्नु अपने आश्रम में बैठकर यज्ञ कर रहे थे । गंगाजी के जल से यज्ञस्थल डूब गया । यज्ञ में विघ्न पड़ने से मुनि क्रुद्ध होकर गंगाजी को योगबल से पी गये । देवता, गंधर्व, मनुष्य आदि चिंता करने लगे कि 'गंगाजी के नहीं रहने से हम लोगों की कैसी दशा होगी !' सबने मिलकर मुनि से गंगाजी को छोड़ देने की प्रार्थना की । तब सामर्थ्यशाली महातेजस्वी जह्नु ने प्रसन्न होकर अपने कानों के छिद्रों द्वारा गंगाजी को पुनः प्रकट कर दिया । तभी से गंगाजी जह्नु मुनि की पुत्री 'जाह्नवी' के नाम से भी पहचानी जाती हैं । गंगाजी राजा भगीरथ के रथ का अनुसरण करती हुई अंत में समुद्र तक पहुँचीं ।

इस प्रकार राजा भगीरथ के पितरों के उद्धार के लिए गंगाजी पृथ्वी पर आ गयीं और भस्म हुए सगर-पुत्रों को अपने जल से आप्लावित करती हुई बहने लगीं । जिस दिन गंगाजी की उत्पत्ति हुई वह दिन 'गंगा जयंती' (वैशाख शुक्ल सप्तमी) और जिस दिन गंगाजी पृथ्वी पर अवतरित हुईं वह दिन 'गंगा दशहरा' (ज्येष्ठ शुक्ल दशमी) के नाम से जाना जाता है । इन दिनों में गंगाजी में गोता मारने से सात्त्विकता, प्रसन्नता और विशेष पुण्यलाभ होता है । वैशाख, कार्तिक और माघ मास की पूर्णिमा, माघ मास की अमावस्या तथा कृष्णपक्षीय अष्टमी तिथि को गंगास्नान करने से भी विशेष पुण्यलाभ होता है । ❐

विद्या क्या है ?

- पूज्य बापूजी

विद्या ददाति विनयम् । विद्या से विनय प्राप्त होता है । यदि विद्या पाकर भी अहंकार बना रहा तो ऐसी विद्या किस काम की ! ऐसी विद्या न तो स्वयं का कल्याण करती है न औरों के ही काम आती है ।

एक समय जयपुर में राजा माधवसिंह का राज्य था । राज्य-सिंहासन पर बैठने से पूर्व माधवसिंह एक सामान्य जागीरदार का पुत्र था । बाल्यकाल से ही वह बड़ा ऊधमी और शैतान था । पढ़ने-लिखने में उसकी रुचि न थी ।

उसके बाल्यकाल के गुरु थे संसारचन्द्र । यदि माधवसिंह को कोई पाठ न आता तो वे उसे कठोर सजा देते । सच्चे गुरु शिष्य का अज्ञान कैसे सहन कर लेते ! बड़ा होने पर बचपन का वही ऊधमी माधवसिंह जयपुर का राजा बना ।

एक दिन माधवसिंह बड़ा दरबार लगाकर बैठा था, तब किसीने राजदरबार में आकर संसारचन्द्र की शिकायत की, जबकि वे बिल्कुल निर्दोष थे ।

माधवसिंह ने संसारचन्द्र को राजदरबार में उपस्थित करने का आदेश दिया । संसारचन्द्र निर्भयतापूर्वक राजदरबार में आये ।

माधवसिंह बोला : ''गुरुजी ! आपको याद होगा कि किसी जमाने में आप मेरे गुरु थे और मैं आपका शिष्य ।''

संसारचन्द्र याद करने लगे तो माधवसिंह ने पुनः कहा : ''जब मुझे कोई पाठ नहीं आता था तब आप मुझे डंडे से मारते थे ।''

संसारचन्द्र के प्राण कंठ तक आ गये । उन्होंने सोचा कि 'अब माधवसिंह जरूर मुझे फाँसी पर लटकायेगा । इसकी क्रूरता तो प्रख्यात है ।' किंतु तभी स्वस्थ होकर संसारचन्द्र ने कहा : ''महाराज ! सत्ता का नशा मनुष्य को खत्म कर देता है । यदि मुझे पहले से ही इस बात का पता होता कि आप जयपुर नरेश बननेवाले हैं तो मैंने आपको उससे भी ज्यादा कठोर सजाएँ दी होतीं । आपको राजा की योग्यता दिलाने के लिए मैंने ज्यादा दंड दिया होता । यदि मैं ऐसा कर पाता तो जो आज आप विद्या को लज्जित कर रहे हैं, उसकी जगह उसे प्रकाशित करते ।''

सारी सभा मन-ही-मन संसारचन्द्र की निर्भयता की प्रशंसा करने लगी । माधवसिंह को भी अपनी क्रूरता के लिए पश्चात्ताप होने लगा । उसने गुरु संसारचन्द्र से क्षमा माँगी और उन्हें सम्मानपूर्वक विदा किया ।

जो विद्या अहं को जगाकर विकृति पैदा करे, वह विद्या ही नहीं है । विद्या तो मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारने का काम करती है और ऐसी विद्या प्राप्त होती है ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के चरणों में ।

धन्य हैं स्पष्टवक्ता संसारचन्द्र और धन्य है गुरु को हितैषी मानकर राजमद छोड़ने व अपनी चतुराई चूल्हे में डालनेवाला माधवसिंह ! राजसत्ता का मद छोड़कर सद्गुरु का आदर करनेवाले छत्रपति शिवाजी की नाईं इस विवेकी ने भी अपनी उत्तम सूझबूझ का परिचय दिया ।

क्या आप लोग भी अपने हितैषियों की कठोरता का सदुपयोग करेंगे ? या बचाव की बकवास करके अवहेलना करेंगे ? ❐

सुख का विज्ञान

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

प्राणिमात्र का एक ही उद्देश्य है कि हम सदा सुखी रहें, कभी दुःखी न हों। सुबह से शाम तक और जीवन से मौत तक प्राणी यही करता है - दुःख को हटाना और सुख को थामना। धन कमाते हैं तो भी सुख के लिए, धन खर्च करते हैं तो भी सुख के लिए। शादी करते हैं तो भी सुख के लिए और पत्नी को मायके भेजते हैं तो भी सुख के लिए। पत्नी के लिए हीरे-जवाहरात ले आते हैं तो भी सुख के लिए और तलाक दे देते हैं तो भी सुख के लिए। प्राणिमात्र जो कुछ चेष्टा करता है वह सुख के लिए ही करता है, फिर भी देखा जाय तो आदमी दुःखी-का-दुःखी है क्योंकि जहाँ सुख है वहाँ उसने खोज नहीं की।

यदि किसीको कहें : 'भगवान करे दो दिन के लिए आप सुखी हो जाओ, फिर मुसीबत आये।' तो वह व्यक्ति कहेगा : 'अरे भैया ! ऐसा न कहिये।'

'अच्छा, दस साल के लिए आप सुखी हो जाओ, बाद में कष्ट आये।'

'नहीं, नहीं...।'

'जियो तब तक सुखी रहो, बाद में नरक मिले।'

' न-न... नहीं चाहते। दुःख नहीं सदा सुख चाहते हैं।'

तो उद्देश्य है सदा सुख का परंतु इच्छा है नश्वर से सुख लेने की, क्षणिक सुखों के पीछे भागने की इसलिए ठोकर खाते हैं।

क्षणिक सुखों की इच्छा क्यों होती है ? क्योंकि क्षण-क्षण में बदलनेवाले जगत की सत्यता खोपड़ी में घुस गयी है। नश्वर जगत की सत्यता चित्त में ऐसी मजबूती से घुस गयी है, नश्वर जगत को, नश्वर संबंधों को, नश्वर परिस्थितियों को इतना सत्य मानते हैं कि सत्य को समझने की योग्यता ही गायब कर देते हैं।

वास्तव में हमारा उद्देश्य तो है शाश्वत सुख किंतु इच्छा होती है नश्वर सुख की, नश्वर वस्तुओं की। तो उद्देश्य और इच्छा जब तक विपरीत रहेंगे तब तक जीवन में 'सोऽहं' का संगीत न गूँज पायेगा। उद्देश्य और इच्छा में जब तक फासला होगा, तब तक दो नाव में पैर रखनेवालों की हालत से हम गुजरते रहेंगे, दुःखी होते रहेंगे।

आप सुखप्राप्ति चाहते हैं, सदा सुखी रहना चाहते हैं, जो स्वाभाविक है। तुम्हारा उद्देश्य जो है न, वह स्वाभाविक है और इच्छा जो है वह अज्ञान से उठती है।

जैसे ठीक जानकारी न होने से, ठीक वस्तु का बोध न होने से आदमी गलत रास्ते चला जाता है। दूरबीन से नक्षत्रों या चाँद को देखना हो और काँच साफ न हो तो ठीक से नहीं दिखता, ऐसे ही ठीक बोध न होने से, ठीक समझ न होने से ज्ञान की नजर खुलती नहीं। और जब तक ज्ञान की नजर खुलती नहीं तब तक सुख-दुःख सब हमारी उन्नति के लिए आते हैं, ऐसा दिखता नहीं।

ठीक देखने के लिए ठीक अंतःकरण चाहिए और ठीक अंतःकरण के लिए उच्च विवेक चाहिए।

संत तुलसीदासजी ने कहा :

बिनु सतसंग बिबेक न होई ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥

भगवान की कृपा से ही ऐसे विवेक के रास्ते मनुष्य चलता है और उसकी अनात्मा की आसक्ति धीरे-धीरे मिटती जाती है तथा आत्मा का ज्ञान, प्रीति, विश्रांति, आत्मतृप्ति, परमात्मतृप्ति की तरफ यात्रा चलती रहती है ।

आत्मतृप्तमानवस्य कार्यं न विद्यते ।

विकारों की तरफ फिसले नहीं तो जल्दी से पूर्ण स्वभाव की प्राप्ति हो जाती है। शिवजी कहते हैं :

उमा राम सुभाउ जेहिं जाना ।
ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
(श्री रामचरित. सुं.कां. : ३३.२)

उस आत्मानंद का रस पाकर फिर वह विकारी रस में आसक्त नहीं होता यही जीवन्मुक्ति है, जीते-जी मुक्ति ! दुःखों से, आकर्षणों से, प्रशंसा से, निंदा से मुक्त महापुरुष बन जाओ । अष्टावक्रजी कहते हैं : **तस्य तुलना केन जायते ?** ऐसे आत्मा-परमात्मा में जागे उस महापुरुष की तुलना किससे करोगे ? इंद्रदेव का सुख भी आत्मसुख के आगे तुच्छ हो जाता है।

'अष्टावक्र गीता' में आता है :

यत्पदं प्रेप्सवो दीनाः शक्राद्याः सर्वदेवताः ।
अहो तत्र स्थितो योगी न हर्षमुपगच्छति ॥

जिस पद को पाये बिना इंद्रादि देवता भी दीन हो जाते हैं, उस आत्मपद को पाकर आत्मारामी महापुरुष न यश से फूलते हैं न अपयश में दुःखी, चिंतित, परेशान होते हैं, ऐसा ब्रह्मस्वभाव का सुख है ।

तैसा अंम्रितु[1] तैसी बिखु[2] खाटी ।
तैसा मानु तैसा अभिमानु ।
हरख सोग[3] जा कै नही बैरी मीत समान ।
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जान ॥

ऐसा सत्संग का विवेक मुक्तात्मा, महात्मा बना देता है । क्षुद्र विषय-विकारी सुख से अपने को थोड़ा बचाते जाओ और निर्विकारी, शाश्वत सुख में बढ़ते जाओ, यही मनुष्य-जीवन की उपलब्धि है । सदा रहनेवाला सुख सदा रहनेवाले अपने क्षेत्रज्ञ स्वरूप में ही है । पंचभौतिक शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार यह अष्टधा प्रकृति का क्षेत्र है । भगवान कहते हैं :

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥
(भगवद्गीता : ७.४)

भगवान कृपा करके अपना स्वभाव बता रहे हैं कि मैं इनसे भिन्न हूँ, अतः आप भी इनसे भिन्न हैं। पंचभौतिक शरीर, मन, बुद्धि और अहंकार बदलते हैं, आप अबदल हैं । आप आत्मा हो, शाश्वत हो; शरीर के मरने के बाद भी आपकी मृत्यु नहीं होती, आप अजर-अमर हो नारायण ! आप अपनी अमरता में जागो, टिको । शाश्वत सुख आपका अपना-आपा है ।

सुख शांति का भण्डार है,
आत्मा परम आनन्द है ।
क्यों भूलता है आपको ?
तुझमें न कोई द्वन्द्व है ॥

भगवान हमारे परम सुहृद हैं । उन परम सुहृद के उपदेश को सुनकर अगर जीव भीतर, अपने स्वरूप में जाग जाय तो सुख और दुःख की चोटों से परे परमानंद का अनुभव करके जीते-जी मुक्त हो जायेगा । जीव जब तक परम सुख नहीं पा लेता तब तक नश्वर सुख की चाह बनी रहती है । ❑

१. अमृत २. विष ३. हर्ष-शोक

संत-सेवा का फल

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

तैलंग स्वामी बड़े उच्चकोटि के संत थे। वे २८० साल तक धरती पर रहे। रामकृष्ण परमहंस ने उनके काशी में दर्शन किये तो बोले : ''साक्षात् विश्वनाथजी इनके शरीर में निवास करते हैं।'' उन्होंने तैलंग स्वामी को 'काशी के सचल विश्वनाथ' नाम से प्रचारित किया।

तैलंग स्वामीजी का जन्म दक्षिण भारत के विजना जिले के होलिया ग्राम में हुआ था। बचपन में उनका नाम शिवराम था। शिवराम का मन अन्य बच्चों की तरह खेलकूद में नहीं लगता था। जब अन्य बच्चे खेल रहे होते तो वे मंदिर के प्रांगण में अकेले चुपचाप बैठकर एकटक आकाश की ओर या शिवलिंग को निहारते रहते। कभी किसी वृक्ष के नीचे बैठे-बैठे ही समाधिस्थ हो जाते। लड़के का रंग-ढंग देखकर माता-पिता को चिंता हुई कि कहीं यह साधु बन गया तो ! उन्होंने उनका विवाह कराने का मन बना लिया। शिवराम को जब इस बात का पता चला तो वे माँ से बोले : ''माँ ! मैं विवाह नहीं करूँगा, मैं तो साधु बनूँगा। अपने आत्मा की, परमेश्वर की सत्ता का ज्ञान पाऊँगा, सामर्थ्य पाऊँगा।'' माता-पिता के अति आग्रह करने पर वे बोले : ''अगर आप लोग मुझे तंग करोगे तो फिर कभी मेरा मुँह नहीं देख सकोगे।''

माँ ने कहा : ''बेटा ! मैंने बहुत परिश्रम करके, कितने-कितने संतों की सेवा करके तुझे पाया है। मेरे लाल ! जब तक मैं जिंदा रहूँ तब तक तो मेरे साथ रहो, मैं मर जाऊँ फिर तुम साधु हो जाना। पर इस बात का पता जरूर लगाना कि संत के दर्शन और उनकी सेवा का क्या फल होता है।''

''माँ ! मैं वचन देता हूँ।''

कुछ समय बाद माँ तो चली गयी भगवान के धाम और वे बन गये साधु। काशी में आकर बड़े-बड़े विद्वानों, संतों से सम्पर्क किया। कई ब्राह्मणों, साधु-संतों से प्रश्न पूछा लेकिन किसीने ठोस उत्तर नहीं दिया कि संत-सान्निध्य और संत-सेवा का यह-यह फल होता है। यह तो जरूर बताया कि

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साध की, हरे कोटि अपराध॥

परंतु यह पता नहीं चला कि पूरा फल क्या होता है। इन्होंने सोचा, 'अब क्या करें ?'

किसी साधु ने कहा : ''बंगाल में बर्दवान जिले की कटवा नगरी में गंगाजी के तट पर उद्धारणपुर नाम का एक महाश्मशान है, वहीं रघुनाथ भट्टाचार्य स्मृति ग्रंथ लिख रहे हैं। उनकी स्मृति बहुत तेज है। वे तुम्हारे प्रश्न का जवाब दे सकते हैं।''

अब कहाँ तो काशी और कहाँ बंगाल, फिर भी उधर गये। रघुनाथ भट्टाचार्य ने कहा : ''भाई ! संत के दर्शन और उनकी सेवा का क्या फल होता है, यह मैं नहीं बता सकता। हाँ, उसे जानने का उपाय बताता हूँ। तुम नर्मदा-किनारे चले जाओ और सात दिन तक मार्कण्डेय चण्डी का सम्पुट करो। सम्पुट खत्म होने से पहले तुम्हारे समक्ष एक महापुरुष और भैरवी उपस्थित होगी। वे तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं।''

शिवरामजी वहाँ से नर्मदा-किनारे पहुँचे और अनुष्ठान में लग गये । देखो, भूख होती है तो आदमी परिश्रम करता है और परिश्रम के बाद जो मिलता है न, वह पचता है । अब आप लोगों को ब्रह्मज्ञान की तो भूख है नहीं, ईश्वरप्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करना नहीं है तो कितना सत्संग मिलता है, उससे पुण्य तो हो रहा है, फायदा तो हो रहा है लेकिन साक्षात्कार की ऊँचाई नहीं आती । हमको भूख थी तो मिल गया गुरुजी का प्रसाद ।

अनुष्ठान का पाँचवाँ दिन हुआ तो भैरवी के साथ एक महापुरुष प्रकट हुए । बोले : ''क्या चाहते हो ?'' शिवरामजी प्रणाम करके बोले : ''प्रभु ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि संत के दर्शन, सान्निध्य और सेवा का क्या फल होता है ?''

महापुरुष बोले : ''भाई ! यह तो मैं नहीं बता सकता हूँ ।''

देखो, यह हिन्दू धर्म की कितनी सच्चाई है ! हिन्दू धर्म में निष्ठा रखनेवाला कोई भी गप्प नहीं मारता कि ऐसा है, ऐसा है । काशी में अनेक विद्वान थे, कोई गप्प मार देता ! लेकिन नहीं, सनातन धर्म में सत्य की महिमा है । आता है तो बोलो, नहीं आता तो नहीं बोलो । शिवस्वरूप महापुरुष बोले : ''भैरवी ! तुम्हारे झोले में जो तीन गोलियाँ पड़ी हैं, वे इनको दे दो ।''

फिर वे शिवरामजी को बोले : ''इस नगर के राजा के यहाँ संतान नहीं है । वह इलाज कर-करके थक गया है । ये तीन गोलियाँ उस राजा की रानी को खिलाने से उसको एक बेटा होगा, भले उसके प्रारब्ध में नहीं है । वही नवजात शिशु तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देगा ।''

शिवरामजी वे तीन गोलियाँ लेकर चले । नर्मदा-किनारे जंगल में, आँधी-तूफानों के बीच पेड़ के नीचे सात दिन के उपवास, अनुष्ठान से शिवरामजी का शरीर कमजोर पड़ गया था । रास्ते में किसी बनिया की दुकान से कुछ भोजन किया और एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे । इतने में एक घसियारा आया । उसने घास का बंडल एक ओर रखा । शिवरामजी को प्रणाम किया, बोला : ''आज की रात्रि यहीं विश्राम करके मैं कल सुबह बाजार में जाऊँगा ।''

शिवरामजी बोले : ''हाँ, ठीक है बेटा ! अभी तू जरा पैर दबा दे ।''

वह पैर दबाने लगा और शिवरामजी को नींद आ गयी तो वे सो गये । घसियारा आधी रात तक उनके पैर दबाता रहा और फिर सो गया । सुबह हुई, शिवरामजी ने उसे पुकारा तो देखा कि वह तो मर गया है । अब उससे सेवा ली है तो उसका अंतिम संस्कार तो करना पड़ेगा । दुकान से लकड़ी आदि लाकर नर्मदा के पावन तट पर उसका क्रियाकर्म कर दिया और नगर में जा पहुँचे ।

राजा को संदेशा भेजा कि 'मेरे पास दैवी औषधि है, जिसे खिलाने से रानी को पुत्र होगा ।'

राजा ने इन्कार कर दिया कि ''मैं रानी को पहले ही बहुत सारी औषधियाँ खिलाकर देख चुका हूँ परंतु कोई सफलता नहीं मिली ।''

शिवरामजी ने मंत्री से कहा : ''राजा को बोलो जब तक संतान नहीं होगी, तब तक मैं तुम्हारे राजमहल के पास ही रहूँगा ।'' तब राजा ने शिवरामजी से औषधि ले ली ।

शिवरामजी ने कहा : ''मेरी एक शर्त है कि पुत्र जन्म लेते ही तुरंत नहला-धुलाकर मेरे सामने लाया जाय । मुझे उससे बातचीत करनी है, इसीलिए मैं इतनी मेहनत करके आया हूँ ।''

यह बात मंत्री ने राजा को बतायी तो राजा आश्चर्य से बोला : ''नवजात बालक बातचीत करेगा ! चलो, देखते हैं ।''

रानी को वे गोलियाँ खिला दीं । दस महीने बाद बालक का जन्म हुआ । जन्म के बाद बालक

को स्नान आदि कराया तो वह बच्चा आसन लगाकर ज्ञान मुद्रा में बैठ गया। राजा की तो खुशी का ठिकाना न रहा, रानी गद्गद हो गयी कि 'यह कैसा बबलू है कि पैदा होते ही ॐऽऽऽ करने लगा ! ऐसा तो कभी देखा-सुना नहीं।'

सभी लोग चकित हो गये । शिवरामजी के पास खबर पहुँची । वे आये, उन्हें भी महसूस हुआ कि 'हाँ, अनुष्ठान का चमत्कार तो है !' वे बालक को देखकर प्रसन्न हुए, बोले : ''बालक ! मैं तुमसे एक सवाल पूछने आया हूँ कि संत-सान्निध्य और संत-सेवा का क्या फल होता है ?''

नवजात शिशु बोला : ''महाराज ! मैं तो एक गरीब, लाचार, मोहताज घसियारा था । आपकी थोड़ी-सी सेवा की और उसका फल देखिये, मैंने अभी राजपुत्र होकर जन्म लिया है और पिछले जन्म की बातें सुना रहा हूँ। इसके आगे और क्या-क्या फल होगा, इतना तो मैं नहीं जानता हूँ।''

ब्रह्म का ज्ञान पानेवाले, ब्रह्म की निष्ठा में रहनेवाले महापुरुष बहुत ऊँचे होते हैं परंतु उनसे भी कोई विलक्षण होते हैं कि जो ब्रह्मरस पाया है वह फिर छलकाते भी रहते हैं। ऐसे महापुरुषों के दर्शन, सान्निध्य व सेवा की महिमा तो वह घसियारे से राजपुत्र बना नवजात बबलू बोलने लग गया, फिर भी उनकी महिमा का पूरा वर्णन नहीं कर पाया तो मैं कैसे कर सकता हूँ ! ❐

महत्त्वपूर्ण निवेदन

सदस्यों के डाक-पते में परिवर्तन अगले अंक के बाद के अंक से कार्यान्वित होगा। जो सदस्य जुलाई २०१० के अंक से अपना पता बदलवाना चाहते हैं, वे कृपया मई २०१० के अंत तक अपना नया पता भेज दें।

बच्चों को क्या दें ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

हमारे भारत के बच्चे-बच्चियों के साथ बड़ा अन्याय हो रहा है। अश्लील चलचित्रों, उपन्यासों द्वारा उनके साथ बड़ा अन्याय किया जा रहा है। फिर भी हमारे बच्चे-बच्चियाँ अन्य देशों के युवक-युवतियों की अपेक्षा बहुत अच्छे हैं, परिश्रमी हैं। कष्ट सहते हैं, देश-विदेश में जाकर बेचारे रोजी-रोटी कमा लेते हैं; दूसरे देशों के युवक-युवतियों की तरह विलासी नहीं हैं । यह सब उनके माँ-बाप की तपस्या है। माँ-बाप जिनका सान्निध्य-सेवन करते हैं उन संतों की तपस्या और हमारी भारतीय संस्कृति के प्रसाद की महिमा है । यह ऐसा प्रसाद है कि सब दुःखों को सदा के लिए मिटाने की ताकत रखता है । यह कहीं जाके, किसीको हटाके, किसीको पाके दुःख नहीं मिटाता। कुछ मिल जाय तब दुःख मिटे, कुछ हट जाय तब दुःख मिटे... नहीं। भारतीय संस्कृति का ज्ञान-प्रसाद तो इतना निराला है कि आप चाहे जैसी परिस्थिति में हैं, वह आपको सुखी बना देता है, हर परिस्थिति में निर्दुःख होने की युक्ति सिखा देता है । मगर दुर्भाग्य है कि हमारे देशवासी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर अपने साथ, अपने बच्चों के साथ अन्याय कर बैठते हैं।

दिल्ली में मेरे सत्संग में एक पुलिस अफसर आया था। उसके दोनों बच्चों को देखकर मुझे तरस आया। मैंने कहा कि ''इनका विकास नहीं

होगा, इनके पेट में तकलीफ है ।''

बोला : ''चॉकलेट खाते हैं ।''

मैंने कहा : ''इतनी चॉकलेट क्यों खिलाते हो ? चॉकलेट से, फास्टफूड से कितनी-कितनी हानि होती है, पेट की खराबी होती है ।''

बस, पैसे मिल गये, अधिकार मिल गया तो खिलाओ, बच्चे हैं... । बच्चों से पूछते हैं : ''क्या चाहिए बेटे ?'' बच्चे टी.वी. में देखते रहते हैं तो बोल देते हैं : 'यह चाहिए, वह चाहिए... ।' इससे बच्चों का स्वास्थ्य और हमारे भारत की गरिमा बिगड़ रही है । बच्चों का माँ-बाप के प्रति सद्‌भाव नहीं रहा । यह कॉन्वेंट स्कूलों में पढ़ाई का परिणाम है । अगर माँ-बाप के जीवन में सत्संग नहीं है तो जो सूझबूझ चाहिए उससे माँ-बाप भी वंचित हो जाते हैं । अज्ञानता बढ़ाने में, विषय-विकार बढ़ाने में अथवा अधिकारलोलुप होकर संघर्ष करने में सुख का, ज्ञान का निवास नहीं है । एकत्व के ज्ञान से ही सारी समस्याओं का समाधान है । यह ज्ञान गुरुकुलों में मिलता है ।

कॉन्वेंट स्कूलों में बच्चों को हिन्दू साधुओं के प्रति नफरत करना सिखाया जाता है । हिन्दू देवी-देवताओं को नीचा दिखाते हैं, हनुमानजी को बंदर साबित कर देते हैं । पूँछवाले किसी जानवर का चित्र बनाते हैं और बच्चों से पूछते हैं कि 'यह क्या है ?' बच्चे कहते हैं : 'जानवर ।'

'कैसे ?'

'क्योंकि इसको पूँछ है ।'

फिर हनुमानजी का चित्र बनाते हैं । बोलते हैं : 'देखो, यह भी जानवर है ।' बच्चों में ऐसे जहरी संस्कार डाल देते हैं । वे ही बच्चे जब बड़े अधिकारी बनते हैं तो हिन्दू होते हुए भी हिन्दू साधुओं के लिए, हिन्दू धर्म के लिए और हिन्दू शास्त्रों के लिए उनके मन में नफरत पैदा हो जाती है, इसलिए बेचारे शराबी हो जाते हैं । शराब पीने से बुद्धि मारी जाती है, फिर न पत्नी का मन सँभाल सकते हैं, न माँ-बाप का मन सँभाल सकते हैं । ऐसे कई युवकों को मैं जानता हूँ । एक व्यक्ति मेरे पास आया और रोते हुए बोला कि 'मेरी लड़की ने ग्रेजुएशन किया, तीस हजार की सर्विस थी और जिससे शादी की उस लड़के की भी पैंतीस हजार की सर्विस थी । बयालीस लाख रुपये शादी में खर्च किये लेकिन बाबा ! बेटी को चार महीने का गर्भ है और उसको लाकर घर पर छोड़ दिया ।'

क्योंकि पढ़ाई ऐसी थी कि खाओ-पियो-मौज करो । और भी कइयों को देखा है । एक व्यक्ति, वह खुद तो किसी कम्पनी में मैनेजर है, पत्नी भी मैनेजर है, बारह-पंद्रह लाख वह भी कमाती है। फिर भी दुःखी हैं क्योंकि उन्हें शिक्षा ही उलटी मिली है, संस्कार ही भोगों के मिले हैं । दूसरों का कुछ भी हो, खुद को मजा आना चाहिए । बाहर का मजा लेने के जो संस्कार हैं, वे अंदर के मजे से वंचित कर देते हैं और पाशवी वृत्तियाँ जगाते हैं । जिन बच्चों को बचपन में ही अच्छे संस्कार मिले हैं, ऐसे बच्चों के लिए बाहरी सुख-सुविधा के साधन उतना मायना नहीं रखते । वे जैसी भी परिस्थिति में रहते हैं, स्वयं तो संतुष्ट रहते हैं, प्रसन्न रहते हैं उनके सम्पर्क में आनेवालों को भी उनसे कुछ-न-कुछ सीखने को मिल जाता है । हम अपने बच्चों को धन न दे सकें तो कोई बात नहीं, बड़े-बड़े बँगले, कोठियाँ, गाड़ियाँ, बैंक बैलेंस न दे सकें तो कोई बात नहीं परंतु अच्छे संस्कार जरूर दें । अगर आपने अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों से सम्पन्न बना दिया तो समझो, आपने उन्हें बहुत बड़ी सम्पत्ति दे दी, बहुत बड़ी पूँजी का मालिक बना दिया । यह अच्छे संस्कारों की पूँजी आपके लाड़लों को जीवन के हर क्षेत्र में सफल बनायेगी, यहाँ तक कि लक्ष्मीपति भगवान से भी मिलने के योग्य बना देगी । बच्चों के मन में अच्छे संस्कार डालना यह हम सबका कर्तव्य है, इसमें हमें प्रमाद नहीं करना चाहिए, लापरवाही नहीं करनी चाहिए। ❐

सत्य-असत्य

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप ॥

आप धन सँभालते हैं या कमाते हैं अथवा व्यवहार करते हैं तो उसमें सत् क्या, असत् क्या इसका विवेक होना चाहिए । कई बार बाहर सत् दिखता है फिर भी उसका फल असत् होता है और कई बार बाहर असत् दिखे फिर भी फल सत् होता है ।

नासमझी का सत्य असत्य हो जाता है । कोई कहे कि 'मैं सत्य बोलता हूँ' लेकिन उससे यदि किसीकी जान जाती है तो ऐसा सत्य असत्य हो जायेगा । जैसे - गाय के पीछे कोई कसाई पड़ा और गाय कैसे भी जंगल में इधर-उधर पगडंडियों से भागते-भागते किसी तपस्वी की झोंपड़ी के पास से गुजरी । कसाई भी उधर से गुजरा और तपस्वी से पूछा : ''तुमने यहाँ से गाय को गुजरते हुए देखा ?'' तपस्वी मौनी था तो उसने इशारा कर दिया कि इधर से गयी । कसाई वहाँ पहुँच गया और निर्दोष गाय की निर्ममता से हत्या कर दी । आकाशवाणी हुई कि 'हे मूर्ख सत्यनिष्ठ तपस्वी ! तूने यह सत्य के बदले असत्य कर दिया ।'

तो अपनी वाणी सत्य हो, हितकर भी हो, मधुर हो, सारगर्भित हो । देश की, धर्म की, अपने प्राणों की, निर्दोष गाय और निर्दोष प्राणी की रक्षा के लिए कभी-कभी असत् भी सत् का फल देता है ।

एक खतरनाक आदमी था । सुबह-सुबह उसने सरोवर-किनारे शौक के लिए या धंधे के लिए मछलियों को पकड़ने का जाल डाला । एक बाबा की नजर पड़ी तो उन्होंने कहा : ''दो रोटी के लिए अथवा शौक के लिए काहे को पाप कमा रहा है ?''

उसने कहा : ''महाराज ! आप मुझे खाना-पीना देंगे ? मैंने तो शादी नहीं की है और मैंने इतने-इतने कुकर्म किये, इतने लोगों की जान ली है... आप मेरे को अपना चेला बना लो ।''

बाबा बोले : ''चेला तो बाद में बनाऊँगा लेकिन इस कर्म से तेरे कर्म और बढ़ेंगे । तू रोटी के लिए मछलियों को मारता है तो चल, थोड़ी-बहुत सेवा कर लेना, रोटी तो आश्रम में मिलेगी ।''

थोड़ी-बहुत सेवा करने से सद्बुद्धि जागी तो बोला : ''बाबा ! दीक्षा दो ।''

बाबा ने कहा : ''नहीं, अभी समय नहीं हुआ है, जाओ तीर्थयात्रा करो । कष्ट दिये हैं तो तीर्थयात्रा में भगवान के लिए कष्ट सहोगे तो पाप मिटेंगे ।''

''बाबा ! कैसे पता चले कि मैं दीक्षा लेने के योग्य हो गया हूँ ?''

बाबा ने अपने आश्रम में से ही एक लट्ठ काटके दे दिया और बोले : ''यह हरा लट्ठ है, जिस दिन यह पीला हो जाय, सूख जाय उस दिन समझ लेना तेरे पाप कट गये, तू दीक्षा के योग्य हो गया ।''

लट्ठ चलाने में तो माहिर था वह । यात्रा को गया, दो-चार गाँव पार करके रात्रि को कहीं मंदिर के चबूतरे पर लेटा था तो कुछ आतंकी विचारवाले लोगों ने वहाँ सलाह-मशविरा किया कि 'इस गाँव को दायीं ओर से फलाना, बायीं ओर से फलाना, पश्चिम से फलाना... इस तरह चारों ओर से फलाने-फलाने की अगुआई में आग

लगायी जायेगी ।'

लेटे-लेटे वह सब सुन रहा था और आदमी उग्र प्रवृत्ति का था ही । देखा कि 'निर्दोष गाँव में कई गायें जल जायेंगी, कई मकान जल जायेंगे, कई बेचारी महिलाएँ आग का शिकार हो जायेंगी । मैंने पाप तो खूब किया है और गुरुजी ने पाप मिटाने के लिए तीर्थ करने को भेजा है, अब क्या करूँ ?' वे तो शराब पीके अपनी योजना बना रहे थे । बस, इसने उठाया लट्ठ और धड़, धड़, धड़... करके दो-चार मुख्य व्यक्तियों को गिरा दिया तो बाकी के व्यक्तियों का दम क्या !

फिर देखा कि 'इतनी हत्याएँ तो पहले की हैं, अभी और हत्याएँ हो गयीं ! यह हरा डंडा तो कब पीला होगा ?'

सुबह देखा तो डंडा पीला हो गया था, सूख गया था । उसने सोचा, 'गुरु महाराज ने शर्त तो रखी थी कि पुण्य करने से हरा डंडा पीला हो जायेगा लेकिन यह तो पाप करने से पीला हो गया ! गुरु महाराज की कहाँ गलती हो गयी !'

भागा वापस और बोला : ''गुरुजी ! अभी तो गंगा-किनारे नहीं पहुँचा था, दो-चार गाँव ही पार किये थे तभी आततायी लोग किसी गाँव पर जुल्म करने की योजना बना रहे थे तो मैंने उनको गिरा दिया । अब दस मरे कि छः मरे मुझे याद नहीं किंतु पूरा गाँव बच गया ।''

गुरु ने कहा : ''यह दिखता अधर्म है लेकिन बहुत लोगों की रक्षा के लिए कुछ आततायियों को मारना यह धर्म है ।''

जैसे गंगा के किनारे आप जप-ध्यान करते हो तो यह सत्कर्म है परंतु गंगा में कोई डूबने लग जाय और आप उसको नहीं बचाते हो तो आपका यह सत् स्थान पर बैठने का सत्कर्म भी असत्कर्म हो जाता है । **गहना कर्मणो गतिः ।** कर्म की गति बड़ी गहन है । सत्-असत् को समझने के लिए भी बड़ी सूक्ष्म मति चाहिए ।

'मैं तो सत्य बोल रहा हूँ...' सत्य तो बोल रहा है परंतु किसीको नीचा दिखाने के लिए तो नहीं बोल रहा ? जैसे दक्ष प्रजापति ने अपने यज्ञ के समय शिवजी के संदर्भ में बोला तो सत्य था कि 'शिव साँप और मुंडों की माला पहनते हैं । वे बहुत ही कुवेश धारण किये रहते हैं तथा भूतों, प्रेतों और पिशाचों के स्वामी हैं ।' परंतु द्वेषबुद्धि से बोला था तो दक्ष प्रजापति का सिर कट गया । यज्ञ तो सत्कर्म है और दक्ष के पास विधि-विधान करानेवाले भी बढ़िया थे लेकिन द्वेषबुद्धि से प्रेरित होकर किया गया सत्कर्म भी असत् फल देता है ।

सत्य हितकर होता है पर उसका उपयोग ऐसे न करो कि किसीके लिए अहितकर हो जाय । तो सत्य हो और हितकर हो । अगर आप राग-द्वेष से रहित होकर सत्कर्म कर रहे हैं तो आपके कर्म आपके लिए मोक्षदायी हो जायेंगे, आपके विचार आपके लिए मोक्षदायी हो जायेंगे, आपका जीवन आपके लिए और दूसरों लिए हितकारी हो जायेगा ।

तो बोले : 'सत्य सही है कि हित सही है ? कहीं-कहीं विषमता हो जाती है । हितकर होना चाहिए, तो हितकर हो और सत्य न हो तो क्या करें ? सत्य है और हितकर नहीं है तो क्या करें ?'

'रामायण' में आता है : **धरमु न दूसर सत्य समाना ।** सत्य के समान दूसरा कोई धर्म नहीं । सर्वोपरि धर्म है सत्य । फिर 'रामायण' में ही धर्म के बारे में ऐसी बात भी आती है जो आपको विचार करने को उत्सुक कर दे : **पर हित सरिस धर्म नहिं भाई ।** परहित के समान कोई धर्म नहीं है । अब दोनों में कौन विशेष ? इसको सुलझाने की युक्तियाँ भी शास्त्र देते हैं । जहाँ सत्य को लेकर भ्रांति हो, वहाँ देखो सत्य परहित के लिए है कि स्वयं के अहं-पोषण के लिए है ? **परहित**

में भ्रम हो तो सत्य की कसौटी करो, सत्य में भ्रम हो तो परहित की कसौटी करो तो अपने-आप रास्ता साफ हो जायेगा ।

सत्य हो और हितकर हो । भले अभी सामनेवाले को हित नहीं लगता लेकिन हम राग-द्वेष से प्रेरित न होकर, उसकी इज्जत बिगड़े इस भाव से प्रेरित न होकर उसको सत्य कहते हैं तो देर-सवेर वह आदमी सत्य की कद्र करेगा, करेगा, करेगा !

किसीने गलती की है । आप गुरु हैं, माता-पिता हैं तो उसकी गलती निकालने के लिए आपका हृदय सत्य का सहारा लेकर उसको समझाता है तो उसे थोड़ा बुरा लगे पर आप घबराओ नहीं, देर-सवेर वह आपके पक्ष में आयेगा ।

तो सत्य ही हितकर होता है, असत्य हितकर नहीं होता । सत्य हमेशा पोषक होता है, रक्षक होता है, स्नेहवर्धक होता है इसलिए सत्य बोलने में द्वेष, अहंकार, बड़प्पन और बदले की भावना न हो तो वह सत्य हितकर होता है । वास्तव में सत्य ही हितकर है ।

सत्य कैसा होता है ? 'महाभारत' के शांति पर्व में सत्य की व्याख्या में सत्य के (अतिरिक्त उसके) तेरह भेद बताये गये हैं : सत्य, समता, दम, मत्सरता का अभाव, क्षमा, लज्जा, तितिक्षा (सहनशीलता), दूसरों के दोष न देखना, त्याग, ध्यान, आर्यता (श्रेष्ठ आचरण), धैर्य, अहिंसा और दया । ये सब सत्य के स्वरूप हैं ।

सत्य अविकारी होता है, शुद्ध होता है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति में समता होती है, दम माने इन्द्रिय-दमन का सामर्थ्य होता है, मत्सरता का अभाव होता है । सत्य बोलनेवाले में क्षमा का गुण होता है, लज्जा अर्थात् मन और वाणी से शांतात्मा होने का गुण भी होता है । सत्यनिष्ठ व्यक्ति तितिक्षावान एवं अनसूया-सम्पन्न अर्थात् दूसरे की उन्नति देखकर जलन न रखनेवाला होता है । उसके अंदर आठवाँ गुण होता है त्याग का सामर्थ्य । नवाँ गुण है परमात्म-ध्यान में विश्रांति पाना । दसवाँ गुण है आर्यता अर्थात् श्रेष्ठ आचरण, किसीका भी अहित न चाहना न करना । सत्यनिष्ठ में ग्यारहवाँ गुण यह होता है कि वह धैर्यवान होता है और बारहवाँ गुण है कि वह अहिंसक वृत्ति का धनी होता है । तेरहवाँ गुण है दया । इन तेरह गुणों से जो सम्पन्न है वह 'सत्यनिष्ठ' है । ईश्वर के साथ एकाकार होने में उसको देर नहीं लगती ।

हम सत्य तो बोलने की कोशिश करते हैं परंतु थोड़ा असत्य का भी आश्रय लेते हैं । साधन तो करते हैं लेकिन असाधन भी करते हैं । अपना गुट बनाना, अपनी लॉबी बनाना असत्य आचरण है । असत्य बोलना तो असत्य है किंतु लॉबी बनाना असत्य में असत्य है । इससे अपनी योग्यता दब जाती है ।

यह सत्संग से जितना ईमानदारी से, जल्दी से हम समझ पाते हैं उतना अपनी तपस्या से नहीं समझ सकते, नहीं कर सकते । इसीलिए सत्संग करना-कराना, सुनना-सुनाना यह बहुत ऊँची बात है ।

सत्संग का आयोजन करके जो लोग पैसा ऐंठना चाहते हैं, वे बड़ी भारी मुसीबत को बुलाते हैं, सात-सात पीढ़ियाँ कंगाल हो जायें उस रास्ते चलते हैं । जो ईमानदारी से सत्संग करते-करवाते हैं, सत्संग-आयोजन का दुरुपयोग नहीं करते, उनकी सात-सात पीढ़ियाँ तर जाती हैं, उनके माता-पिता धन्य हैं !

आजकल कहीं-कहीं छोटे-मोटे सत्संगों में आयोजक अपनी जेब भरने की कोशिश करते हैं, यह बहुत नुकसान का काम है। ऐसे आयोजक मेरे आगे नहीं फटक सकते । ऐसे आयोजक अन्य वक्ताओं को खोजते हैं । ❐

विकारों से बचने हेतु संकल्प-साधना

– भगवत्पाद स्वामी
श्री श्री लीलाशाहजी महाराज

विषय-विकार साँप के विष से भी अधिक भयानक हैं, इन्हें छोटा नहीं समझना चाहिए। सैकड़ों लीटर दूध में विष की एक बूँद डालोगे तो परिणाम क्या मिलेगा ? पूरा सैकड़ों लीटर दूध व्यर्थ हो जायेगा।

साँप तो काटेगा तभी विष चढ़ पायेगा किंतु विषय-विकार का केवल चिंतन ही मन को भ्रष्ट कर देता है। अशुद्ध वचन सुनने से मन मलिन हो जाता है।

अतः किसी भी विकार को कम मत समझो। विकारों से सदैव सौ कोस दूर रहो। भ्रमर में कितनी शक्ति होती है कि वह लकड़ी को भी छेद देता है, परंतु बेचारा फूल की सुगंध पर मोहित होकर पराधीन होके अपने को नष्ट कर देता है। हाथी स्पर्श के वशीभूत होकर स्वयं को गड्ढे में डाल देता है। मछली स्वाद के कारण काँटे में फँस जाती है। पतंगा रूप के वशीभूत होकर अपने को दीये पर जला देता है। इन सबमें सिर्फ एक-एक विषय का आकर्षण होता है फिर भी ऐसी दुर्गति को प्राप्त होते हैं, जबकि मनुष्य के पास तो पाँच इन्द्रियों के दोष हैं। यदि वह सावधान नहीं रहेगा तो तुम अनुमान लगा सकते हो कि उसका क्या हाल होगा !

अली पतंग मृग मीन गज, एक एक रस आँच।
तुलसी तिनकी कौन गति जिनको ब्यापे पाँच ॥

अतः भैया मेरे ! सावधान रहें। जिस-जिस इन्द्रिय का आकर्षण है उस-उस आकर्षण से बचने का संकल्प करें। गहरा श्वास लें और प्रणव (ॐकार) का जप करें। मानसिक बल बढ़ाते जायें। जितनी बार हो सके बलपूर्वक उच्चारण करें, फिर उतनी ही देर मौन रहकर जप करें। 'आज उस विकार में फिर से नहीं फँसूँगा या एक सप्ताह तक अथवा एक माह तक नहीं फँसूँगा...' ऐसा संकल्प करें। फिर से गहरा श्वास लें और 'हरि ॐ ॐ ॐ ॐ... हरि ॐ ॐ ॐ ॐ...' ऐसा उच्चारण करें। ❒

(पृष्ठ २४ से 'केवल हरिभजन को छोड़कर...' का शेष)
साथ नहीं आता और मानव रीता चला जाता है। हरिभजन का हीरा कमाया नहीं, कंकड़-पत्थर चुग रीता चला मानव... कैसी विडम्बना है !

इसलिए शास्त्रों में आता है :

शतं विहाय... कोटि त्यक्त्वा हरिभजेत्।

'सौ काम छोड़कर समय से भोजन कर लो, हजार काम छोड़कर स्नान कर लो, लाख काम छोड़कर दान-पुण्य कर लो और करोड़ काम छोड़कर परमात्मा की प्राप्ति में लग जाओ।'

सत्संग महान पुण्यदायी है। मनुष्य-जन्म की सार्थकता किसमें है, यह विवेक सत्संग से ही मिलता है।

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥

अतः सत्संगरूपी अमृत का त्याग कभी नहीं करना चाहिए। भले करोड़ों काम छोड़ने पड़ें, सत्संग में तो अवश्य ही जाना चाहिए। ❒

सात्त्विक श्रद्धा की ओर

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥

'हे भारत ! सभी मनुष्यों की श्रद्धा उनके अंतःकरण के अनुरूप होती है। यह पुरुष श्रद्धामय है, इसलिए जो पुरुष जैसी श्रद्धावाला है, वह स्वयं भी वही है।' **(भगवद्गीता : १७.३)**

भगवान श्रीकृष्ण की जगत-उद्धारिणी वाणी 'भगवद्गीता' विश्ववंदनीय ग्रंथ है। 'भगवद्गीता' भगवान के हृदय के अनुभव की पोथी कही गयी है। सत्रहवें अध्याय के तीसरे श्लोक में भगवान स्वयं कहते हैं : हे अर्जुन ! हे भारत !! 'भा' माना ज्ञान, 'रत' माना उसमें रमण करनेवाले लोग जिस देश में रहते हैं, उसको भारत बोलते हैं। अर्जुन को भी यहाँ सम्बोधन दिया - 'भारत !' ज्ञान में रत रहनेवाले अर्जुन ! सभी मनुष्यों की श्रद्धा अंतःकरण के अनुरूप होती है।

मनुष्य चाहे बाहर से कैसा भी दिखे किंतु भीतर उसकी जैसी आस्था होती है, ऐसी मान्यता बनती है, ऐसे कर्म होते हैं। एक ही माँ-बाप की संतानें भिन्न-भिन्न मान्यतावाली और भिन्न-भिन्न कर्म करती हुई दिखती हैं। एक ही पक्ष के लोगों का आचरण भी भिन्न-भिन्न मान्यता और भिन्न-भिन्न कर्मवाला देखा जा सकता है। एक ही धर्म, मजहब, पंथ के लोगों में भी अपनी-अपनी श्रद्धा, मान्यता के अनुसार कर्मों में भिन्नता दिखती है।

श्रद्धा वास्तव में शुद्धस्वरूप सच्चिदानंद परमात्मा की वृत्ति है परंतु गुणों के मेल से इसके तीन विभाग हैं - सात्त्विक श्रद्धा, राजस श्रद्धा, तामस श्रद्धा।

जिनकी सात्त्विक श्रद्धा है उनके जीवन में सात्त्विक आहार, कर्म, शास्त्र व गुरु की पसंदगी होगी और सात्त्विकता का परम फल है कि उनके हृदय में परमात्मप्राप्ति की रुचि जागेगी, जागेगी और जागेगी ! उनमें सुख-दुःख और परिस्थितियों में सामान्य, निगुरे लोगों की अपेक्षा शांति और समता अधिक होगी।

यदि यक्षों में, किन्नरों में, गंधर्वों में, धन कमाने में, सत्ता पाने में श्रद्धा है तो यह राजसी श्रद्धा है। वह मौका पाकर अपने स्वार्थ के लिए कभी किसीका कुछ भी करवा लेगी। अगर किसीकी धर्म व भगवान में श्रद्धा है और वह राजसत्ता चाहता है तो उसके द्वारा हत्याएँ नहीं होंगी, दूसरे कुकर्म नहीं होंगे। जिसकी श्रद्धा तामसी और राजसी है, वह शराब भी पी लेगा, कबाब भी खा लेगा, पिटाई भी करवा देगा, झगड़े भी करवा देगा, हत्या भी करवा लेगा और चाहेगा कि मेरे को मनचाहा मिलना चाहिए। 'मैं लंकापति रावण हूँ... सीता-हरण हो जाय तो हो जाय परंतु मैं अपनी चाह पूरी करूँगा'- यह राजसमिश्रित तामसी वृत्ति है।

रजस् में और तमस् में श्रद्धा सदा के लिए टिकेगी नहीं। राजसी श्रद्धावाला बुरे कर्म कर लेता है पर अंत में पछताता है - यह उसकी सात्त्विक वृत्ति है। अच्छा हुआ तो मैंने किया और गड़बड़ हुई तो 'क्या करें भाई ! तुम्हारा मुकद्दर ऐसा था, भगवान की मर्जी है'- यह राजसी व्यक्ति का स्वभाव है। सात्त्विक श्रद्धावाला दूर की सोचता है, दूर की जानता है। अच्छा हुआ तो बोलेगा, 'भगवान की कृपा' और कुछ घटिया हुआ तो कहेगा, 'मेरी असावधानी, लापरवाही रही होगी अथवा तो

भगवान मेरे किन्हीं पापकर्मों का फल भुगताकर मुझे शुद्ध करना चाहते होंगे। जो हुआ अच्छा हुआ।'

सात्त्विक श्रद्धावाला सफलता में और विफलता में भी भगवान को धन्यवाद देगा। राजसी श्रद्धावाला सफलता में छाती फुलायेगा और विफलता में अन्य लोगों को, भगवान को कोसेगा। तामसी श्रद्धावाला अपने को भी कोसेगा और सामनेवाले का भी कुछ भी करके नुकसान कराये बिना उसे चैन नहीं पड़ेगा। है तो सभीमें वह चैतन्य परंतु श्रद्धा के प्रकार और श्रद्धा में प्रतिशत की भिन्नता होने से व्यक्ति के स्वभाव में, मान्यता में, खुशियों में, गम में फर्क पड़ता है।

कोई राजसी श्रद्धा में जीता है और उसका कोई प्रिय व्यक्ति मर गया तो सिर पटकेगा, खूब रोयेगा और तामसी श्रद्धावाला तो आत्महत्या करने को भी उत्सुक हो जायेगा अथवा तो शराब आदि कुछ पीके पड़ा रहेगा। सात्त्विकवाला बोलेगा : 'इसमें क्या बड़ी बात है !'

तामसी और राजसी श्रद्धावाला व्यक्ति तो सुख-दुःख की खाई में जा गिरता है परंतु सत्संगी और सात्त्विक श्रद्धावाला व्यक्ति तो सुख को भी स्वप्न समझता है, उसका बाँटकर उपयोग करता है, दुःख को भी स्वप्न समझता है और उसे पैरों तले कुचलकर आगे बढ़ जाता है।

न खुशी अच्छी है न मलाल अच्छा है।
प्रभु जिसमें रख दे वह हाल अच्छा है॥
हमारी न आरजू है न जुस्तजू है।
हम राजी हैं उसमें जिसमें तेरी रजा है॥

इस प्रकार सात्त्विक श्रद्धा का धनी सुख-दुःख, मान-अपमान, निंदा-स्तुति, जीवन-मृत्यु को ऊपर उठने का साधन बनाते-बनाते साध्य की तरफ आगे बढ़ता है, परमात्म-समता में, परमात्मा में स्थिति कर लेता है।

इस त्रिगुणमयी सृष्टि में जैसे श्रद्धा तीन प्रकार की है, ऐसे ही भोजन भी तीन प्रकार का है। जौ, गेहूँ, चावल, घी, दूध, सब्जियाँ आदि रसयुक्त, चिकना, स्वभाव से ही मन को प्रिय ऐसा आहार सात्त्विक श्रद्धावाले को प्रिय लगेगा। जिसको कड़वा, खट्टा, खारा, बहुत गरम, तीखा, रूखा, दाहकारक और दुःख, चिंता तथा रोगों को उत्पन्न करनेवाला आहार अधिक प्यारा लगता है, वे राजसी श्रद्धावाले हैं। जिसको अधपका, रसरहित, दुर्गन्धयुक्त, बासी, जूठा तथा अंडा, मांस, मदिरा आदि अपवित्र आहार लेने की, इधर-उधर का मिश्रित करके भी मौज करने की रुचि होगी, वह तामसी विचार का व्यक्ति माना जाता है।

देवर्षि नारदजी कहते हैं : **श्रद्धापूर्वाः सर्वधर्मा...** श्रद्धा सब धर्मों (शास्त्रविहित कर्मों) के मूल में है। तामसी, राजसी, सात्त्विक किसी भी साधना-पद्धति में सफलता पाने के लिए श्रद्धा चाहिए। अरे ! रोजी-रोटी, नौकरी-धंधा और पढ़ाई-लिखाई में भी श्रद्धा चाहिए कि 'मैं पढूँगा, पास होऊँगा और आई.ए.एस. बनूँगा।' ऐसी श्रद्धा करके चलते हैं तभी आई.ए.एस. पदवी तक पहुँचते हैं। हालाँकि सभी आई.ए.एस. जिलाधीश नहीं बनते।

श्रद्धा के बिना कोई नहीं रह सकता। वास्तव में श्रद्धा तो भगवद्रूपा है। वे लोग बिल्कुल धोखे में हैं जो बोलते हैं कि हमें श्रद्धा से कोई लेना-देना नहीं है, हम भगवान को-अल्लाह को नहीं मानते हैं। श्रद्धा सभी धर्मों-कर्मों में पहले होती है। चाहे राजसी धर्म-कर्म हो, चाहे तामसी हो, चाहे सात्त्विक हो, उसके मूल में श्रद्धारूपी इंजन होता है तभी आदमी प्रवृत्ति करता है। अब आपको पौरुष क्या करना है ? तामसी श्रद्धा का प्रभाव कम करके राजसी बना दो और राजसी श्रद्धा के प्रभाव को कम करके सात्त्विक बना दो। जब आप दृढ़ सात्त्विक श्रद्धा प्राप्त कर लेंगे तो ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु का आत्मप्रसाद पचाने में सक्षम बनेंगे और पूर्णता की ओर तीव्र गति से यात्रा करेंगे। ❑

सफलता का रहस्य

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

'यम, कुबेर, देवी-देवता, सूर्य-चन्द्र, हवाएँ सब मुझ चैतन्य की सत्ता से अपने नियत कार्य में लगे हैं, ऐसा मैं आत्मदेव हूँ ।' इस वास्तविकता में जागो। अपने को देह, व्यक्ति, जातिवाला क्या मानना, अपने को ब्रह्म जानकर मुक्ति का अभी अनुभव कर लो । दुनिया क्या कहती है इसके चक्कर में मत पड़ो। उपनिषदें क्या कहती हैं, वेद क्या कहते हैं यह देखो । उनके ज्ञान को पचाकर आप अमर हो जाओ और दूसरों के लिए अमरता का शंखनाद कर दो ।

श्रीकृष्ण जैसे महान ज्ञानी ! उन्होंने प्रतिज्ञा की थी : 'मैं महाभारत के युद्ध में अस्त्र-शस्त्र नहीं उठाऊँगा ।' फिर जब देखा कि अर्जुन की परिस्थिति नाजुक हो रही है तो सुदर्शन चक्र तो नहीं उठाया परंतु रथ का पहिया उठाकर दौड़े । बूढ़े भीष्मजी को भी हँसी आ गयी कि यह कन्हैया कैसा अटपटा है ! हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि इतने महान ज्ञानी श्रीकृष्ण और बंसी बजाते हैं, नाचते हैं, बछड़ों की पूँछ पकड़कर दौड़ते हैं, गायों के सींगों को पकड़कर खेलते हैं क्योंकि श्रीकृष्ण अपने निजानंदस्वरूप में निमग्न रहते हैं। आज का मनुष्य भेदभाव से देहाध्यास बढ़ाकर अहंकार और वासनाओं के कीचड़ में लथपथ रहता है ।

चलो, उठो... छोड़ो देहाभिमान को । दूर फेंको वासनाओं को । शत्रु-मित्र में, मेरे-तेरे में, कारणों के कारण में, सबमें छुपा हुआ अपना दैवी स्वभाव निहारो ।

शत्रु-मित्र सबका कारण कृष्ण हमारा आत्मा है । हम किसी व्यक्ति पर दोषारोपण कर बैठते हैं। 'हमको इसने गिराया, हमारा उसने पतन कराया...' ऐसे दूसरों को निमित्त मानते हैं। वास्तव में अपनी वासना ही पतन का कारण है । दुनिया में और कोई किसीका पतन नहीं कर सकता । जीव की अपनी दुष्ट इच्छाएँ-वासनाएँ ही उसे पतन की खाई में गिराती हैं । अपनी सच्चाई, ईश्वर-प्रेम, शुद्ध-सरल व्यवहार अपने को खुश रखता है, प्रसन्न रखता है, उन्नत करता है ।

'फलाना आदमी हमें यह भोग-पदार्थ दे गया... ।' अरे, प्रारब्धवेग से पदार्थ आया परंतु पदार्थ का भोक्ता बनना-न बनना आपके हाथ की बात है। प्रारब्ध से धन तो आ गया लेकिन धन थोड़े ही बोलता है कि हमारे गुलाम बनो। प्रारब्ध वस्तुएँ दे सकता है, वस्तुएँ छीन सकता है परंतु वस्तुओं में आसक्त होना-न होना, वस्तुएँ चली जायें तो दुःखी होना-न होना आपके हाथ की बात है । प्रारब्ध से पुरुषार्थ बढ़िया होता है । पुरुषार्थ से प्रारब्ध बदला जा सकता है, मिथ्या किया जा सकता है। मंद प्रारब्ध को बदला जाता है, कुचला जाता है, तरतीव्र प्रारब्ध को मिथ्या किया जाता है । अपने आत्मबल पर निर्भर रहना है कि कार्य-कारण भाव में स्वयं को कुचलवाते रहना है !

निर्मम, निरहंकार होने से शरीर में आत्मज्योति की शक्ति ऐसे फैलती है जैसे फानूस में से प्रकाश। आप अहंता-ममता से जितने रहित होंगे, उतनी आत्मज्योति आपके द्वारा चमकेगी, औरों को प्रकाश देगी ।

अहंकार करने से, व्यक्तित्व को सजाने से मोह नहीं जाता । दूसरों को जितना उल्लू बनाने की इच्छा है उतनी खीर-खाँड़ खिलाने की भावना करो तो घृणा प्रेम में बदल जायेगी, असफलता

सफलता में बदल जायेगी । मानो, कोई आपका कुछ बिगाड़ रहा है तो वह जितना बिगाड़ता है उससे ज्यादा जोर से आप उसका भला करो, उसका भला चाहो, विजय आपकी होगी । 'वह मेरा बुरा करता है तो मैं उसका सवाया बुरा करूँ' - ऐसा सोचोगे तो आपकी पराजय हो जायेगी । आप उसीके पक्ष में हो जाओगे । किसी घमंडी-अहंकारी को ठीक करने के लिए आपको भी अहंकार की शरण लेनी पड़ी । अंतर्यामी से एक होकर अपनत्व के भाव से सामनेवाले के कल्याण-चिंतन में लग गये तो वह आपके पक्ष में आये बिना नहीं रहेगा । बाहर के कारणों को लेकर उसको ठीक करना चाहा तो आप उसके पक्ष में हो गये । अंतर्यामी से एक होकर बाह्य कारणों का, साधनों का थोड़ा-बहुत उपयोग कर लिया तो कोई हरकत नहीं है परंतु पहले अंतर्यामी से एक हो जाओ । भीतरवाले से नाता बिगाड़ो नहीं ।

शत्रु का भी अहित न चाहो । कोई अत्यंत निकृष्ट है तो थोड़ी-बहुत सजा-शिक्षा चाहे करो परंतु द्वेषभाव से नहीं, उसका मंगल हो इस भाव से । जैसे आप अपने इकलौते बेटे को सजा देना चाहो तो कैसे देते हो ? बाप कहे कि 'या तो बेटा रहेगा या मैं रहूँगा' तो यह उसकी बुद्धि का दिवाला है, ज्ञान व समता की कमी है । समतावाले को फरियाद कहाँ ! फरियाद के समय समता कहाँ !

पाप-पुण्य, सुख-दुःख ये सब आपके द्वारा दिखते हैं । ये परप्रकाश्य हैं, आप स्वयंप्रकाश हो । ये जड़ हैं, आप चेतन हो । चेतन होकर जड़ चीजों से डर रहे हो ! यह बड़ा विशाल भवन हमने बनाया है । उससे भय कैसा ! ऐसे ही सुख-दुःख, पाप-पुण्य सब हमारे चैतन्य के फुरने से ही बने हैं । उनसे क्या डरना ! जीवन में त्याग और प्रेम आ जाय तो सब सुख आ जायें । स्वार्थ और घृणा आ जाय तो सब दुःख आ जायें । कारणों के कारण उस ईश्वर से तादात्म्य हो जाय तो सारे सुख-दुःख खेलमात्र रह जायेंगे । इस बात पर आप डट जाओ तो दुनिया और दुनिया के पदार्थों की क्या ताकत है कि आपकी सेवा न करें ! अपने भीतरवाले अंतर्यामी आत्मा से अभेद भाव से व्यवहार करने लग जाओ तो सब लोग चाकर की तरह आपकी सेवा करके अपना भाग्य बनाने लग जायेंगे; परिस्थितियाँ आपके लिए करवटें लेंगी, रंग बदलेंगी । अग्नि की ज्वालाएँ नीचे की ओर जाने लगें और सूर्य पश्चिम में उदय होने लगे तब भी वेद भगवान के ये वचन गलत नहीं हो सकते । भगवान ने 'गीता' में कहा है :

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

'अनन्य चित्त से चिंतन करते हुए जो लोग मेरी उपासना करते हैं, उन नित्ययुक्त पुरुषों का योगक्षेम मैं अपने ऊपर लेता हूँ ।' **(गीता : ९.२२)**

'इतना मुनाफा करें, इतने रुपयों की व्यवस्था कर लें, बाद में भजन करेंगे ।' ...तो ईश्वर से रुपयों को, परिस्थितियों को ज्यादा मूल्य दे दिया । हरिद्वार-ऋषिकेश में ऐसे कई लोग हैं जो 'फिक्स्ड डिपोजिट' में रुपये रखकर, किराये के कमरे लेकर भजन करते हैं । उनका आश्रय ईश्वर नहीं है, उनका आश्रय सूद (ब्याज) है, उनका आश्रय पेंशन है । ब्याज खाकर जीते हैं और आखिर में मूड़ी (धन) का क्या होगा यह चिंता करते-करते विदा होते हैं । जिन्होंने बाहर के बड़े-बड़े आश्रय बनाकर भजन किया, उनके भजन में कोई बरकत नहीं आयी । जिन्होंने बाहर के सब आश्रयों को लात मार दी, ठुकरा दिया, पूर्णरूपेण ईश्वर के होकर घर से चल पड़े उनको भजन की सब सुविधाएँ मिल ही गयीं । खाने-पीने, रहन-सहन का इंतजाम अपने-आप होता रहा और भजन भी फल गया । ब्याज के रुपयों पर जीनेवालों की अपेक्षा ईश्वर के आधार पर जीनेवालों को अधिक सुविधाएँ मिल जाती हैं ।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'जीवन विकास' से क्रमशः) ❑

केवल हरिभजन को छोड़कर...

सरोज अपनी ही धुन में न जाने क्या-क्या सोचती हुई मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी । अचानक उसे लगा कि कोई उसे पुकार रहा है । उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसकी सत्संगी बहन कांता उसे बुला रही थी । वह रुक गयी । कांता उसके समीप आकर बोली : ''बहन ! काफी दिनों से तुम सत्संग में नहीं आ रही हो । क्या कहीं बाहर गयी थी ?''

सरोज बोली : ''क्या बताऊँ बहन ! पिछले मंगलवार से बुखार छोड़ने का नाम ही नहीं लेता है और हमारा नौकर रामू गाँव गया हुआ है । अब घर के सारे काम भी मुझे ही करने पड़ते हैं । सुबह बच्चों को नाश्ता कराके तैयार कर स्कूल भेजती हूँ, उसके बाद नौ बजे ये जाते हैं । घर की सफाई, बर्तन, कपड़े आदि धोकर अभी कमर सीधी करने लगती हूँ कि स्कूल से बच्चे आ जाते हैं । फिर उन्हें खाना खिलाना, होमवर्क (गृहकार्य) करवाना... । बस, ऐसा करते-करते कब दिन बीत जाता है पता ही नहीं चलता । रात को फिर वही खाना बनाना, खाना खिलाना... करते-करते १० बजे जाकर इस गाड़ी को आराम मिलता है । क्या बताऊँ बहन ! यह मनहूस डेढ़ सप्ताह तो ऐसा बीता कि कुछ पूछो ही नहीं !''

सरोज की बात सुनकर कांता कुछ गम्भीर-सी हो गयी और बोली : ''हाँ बहन ! यह गृहस्थी का झंझट ही ऐसा है, न करते ही बनता है और न छोड़ते ही बनता है । परंतु बहन ! इसमें हमारी भी कुछ गलती है । गृहस्थी में भी बड़े-बड़े भक्त रहते हैं । उनके भी बाल-बच्चे होते हैं, उनकी भी रिश्तेदारियाँ होती हैं, इतना सब होने पर भी वे भगवद्भजन को ज्यादा महत्त्व देते हैं । एक हम लोग हैं कि दिन-रात घर के झंझटों में ही फँसे रहते हैं और जब कभी जरा-सी फुर्सत मिलती है तब हमारा मूड नहीं होता भजन करने का । अब तू अपना ही देख, तेरा नौकर नहीं था, तुझे बुखार भी था, तब भी तूने सारे काम-धंधे किये, केवल हरिभजन को छोड़कर !''

दोनों बातचीत करती-करती मंदिर के दरवाजे तक पहुँच गयीं और भगवान श्री राधा-माधव को प्रणाम कर सत्संग-भवन में चली गयीं । सत्संग समाप्त होने पर सभी सत्संगी खुशी-खुशी अपने-अपने घरों को चल दिये परंतु सरोज के कानों में कांता की वही बातें गूँज रही थीं और खासकर वह अंतिम वाक्य : '... ... केवल हरिभजन को छोड़कर !'

वह सोचने लगी, 'हाँ, बात तो सही है । वास्तव में इन बीमारी के दिनों में मैंने घर का कौन-सा काम नहीं किया ? सब कुछ ही तो किया, केवल हरिभजन को छोड़कर !'

भक्त सूरदासजी के वचन उसके कानों में गूँज रहे थे :

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
जिन तन दियो ताहि बिसरायो,
ऐसो नमक हरामी ॥

यह मानव-तन हरिभजन के लिए मिला है लेकिन मनुष्य अपना सारा कीमती समय व्यर्थ के क्रियाकलापों, व्यर्थ की चर्चाओं में लगा देता है और हरिभजन के लिए उसके पास समय ही नहीं बचता । जिनके लिए पूरा जीवन खपा देता है, अंत समय उनमें से कोई भी **(शेष पृष्ठ १९ पर)**

दैनिक जागरण, दि. ३० अप्रैल (विष्णु गुप्त) : पोप बेनेडिक्ट सोलहवें और कैथोलिक चर्च की दया, शांति व कल्याण की असलियत दुनिया के सामने उजागर हो ही गयी। जब पोप बेनेडिक्ट सोलहवें और कैथोलिक चर्च का क्रूर अनैतिक चेहरा सामने आया, तब विशेषाधिकार का कवच उठाया गया।

कैथोलिक चर्च ने नयी परिभाषा गढ़ दी कि उनके धर्मगुरु पोप बेनेडिक्ट सोलहवें पर न तो मुकदमा चल सकता है और न ही उनकी गिरफ्तारी सम्भव हो सकती है, क्योंकि पोप बेनेडिक्ट न केवल ईसाइयों के धर्मगुरु हैं बल्कि वेटिकन सिटी के राष्ट्राध्यक्ष भी हैं। एक राष्ट्राध्यक्ष के तौर पर उनकी गिरफ्तारी हो ही नहीं सकती है। जबकि अमेरिका और यूरोप में कैथोलिक चर्च और पोप बेनेडिक्ट सोलहवें की गिरफ्तारी को लेकर जोरदार मुहिम चल रही है। न्यायालयों में दर्जनों मुकदमे दर्ज करा दिये गये हैं और न्यायालयों में उपस्थित होकर पोप बेनेडिक्ट सोलहवें को आरोपों का जवाब देने के लिए कहा जा रहा है।

यह सही है कि पोप बेनेडिक्ट सोलहवें के पास वेटिकन सिटी के राष्ट्राध्यक्ष का कवच है इसलिए वे न्यायालयों में उपस्थित होने या फिर पापों के परिणाम भुगतने से बच जायेंगे, लेकिन कैथोलिक चर्च और पोप की छवि तो धूल में मिल ही गयी है। इसके अलावा चर्च में दया, शांति और कल्याण की भावना जागृत करने की जगह दुष्कर्मों की पाठशाला कायम हुई है, इसकी भी पोल खुल चुकी है। चर्च-पादरियों द्वारा यौन-शोषण के शिकार बच्चों के उत्थान के लिए कुछ भी नहीं किया गया और न ही यौन-शोषण के आरोपी पादरियों के खिलाफ कोई कार्रवाई हुई है। इस पूरे घटनाक्रम को अमेरिका-यूरोप के मीडिया ने 'वेटिकन सेक्स स्कैंडल' का नाम दिया है।

कुछ दिन पूर्व ही पोप बेनेडिक्ट सोलहवें ने आयरलैंड में चर्च-पादरियों द्वारा बच्चों के यौन-शोषण के मामले प्रकाश में आने पर इस कुकृत्य के लिए माफी माँगी थी।

पोप पर आरोप

पोप बेनेडिक्ट सोलहवें पर कोई सतही नहीं बल्कि गम्भीर और प्रमाणित आरोप हैं, जो उनकी एक धर्माचार्य और राष्ट्राध्यक्ष की छवि को तार-तार करते हैं।

अब सवाल यह है कि पोप बेनेडिक्ट सोलहवें पर आरोप हैं क्या ? पोप बेनेडिक्ट सोलहवें पर दुष्कर्मी पादरियों को संरक्षण देने और उन्हें कानूनी प्रक्रिया से छुटकारा दिलाने के आरोप हैं। पोप बेनेडिक्ट सोलहवें ने यौन-शोषण के अपराधी कई पादरियों को सजा से बचाने जैसे कुकृत्य किये हैं। लेकिन सर्वाधिक अमानवीय, लोमहर्षक व चर्चित पादरी लारेंस मर्फी का प्रकरण है। लारेंस मर्फी १९९० के दशक में अमेरिका के एक कैथोलिक चर्च में पादरी थे। उस चर्च में अनाथ, विकलांग और मानसिक रूप से बीमार बच्चों के लिए एक आश्रम भी था।

पादरी लारेंस मर्फी पर २३० से अधिक बच्चों के यौन-शोषण का आरोप है। सभी २३० बच्चे अपाहिज और मानसिक रूप से विकलांग थे। इनमें से अधिकतर बच्चे बहरे भी थे। मानसिक रूप से बीमार और अपाहिज बच्चों के साथ यौन-उत्पीड़न की घटना सामने आने पर अमेरिका में तहलका मच गया था। कैथोलिक चर्च की छवि के साथ ही साख पर संकट खड़ा हो गया था। कैथोलिक चर्च में विश्वास करनेवाली आबादी इस घिनौने कृत्य से न केवल आक्रोशित थी बल्कि कैथोलिक चर्च से उनका विश्वास भी डोल रहा था।

कैथोलिक चर्च को बच्चों के यौन-उत्पीड़न के बारे में पूर्ण जानकारी लेनी चाहिए थी और

सच्चाई उजागर कर आरोपित पादरी पर आपराधिक दंड संहिता चलाने में मदद करनी चाहिए थी, लेकिन कैथोलिक चर्च ने ऐसा किया नहीं। कैथोलिक चर्च को इसमें अमेरिकी सत्ता की सहायता मिली। विवाद के पाँव लम्बे होने से कैथोलिक चर्च की नींद उड़ी और उसने आरोपित पादरी लारेंस मर्फी पर कार्रवाई के लिए वेटिकन सिटी और पोप को अग्रसारित किया था।

पोप बेनेडिक्ट सोलहवें का नाम उस समय कार्डिनल जोसेफ था और वे वेटिकन सिटी के उस विभाग के अध्यक्ष थे जिसके पास पादरियों द्वारा बच्चों के साथ यौन-उत्पीड़न किये जाने की जाँच का जिम्मा था। पोप बेनेडिक्ट ने पादरी लारेंस मर्फी को सजा दिलाने में कोई रुचि नहीं दिखायी। बात इतनी ही नहीं थी, इससे भी आगे की थी। मामले को रफा-दफा करने की पूरी कोशिश हुई। अमेरिकी कानूनों के तहत लारेंस मर्फी की गिरफ्तारी और दंड की सजा में रुकावटें डाली गयीं।

वेटिकन सिटी का कहना था कि पादरी लारेंस मर्फी भले आदमी हैं और उन पर दुर्भावनावश यौन-शोषण के आरोप लगाये गये हैं। इसमें कैथोलिक चर्च विरोधी लोगों का हाथ है, जबकि मर्फी पर लगे आरोपों की जाँच कैथोलिक चर्च के दो वरिष्ठ आर्चबिशपों ने की थी। सिर्फ अमेरिका तक ही कैथोलिक चर्च में यौन-शोषण का मामला चर्चा में नहीं है, बल्कि वेटिकन सिटी में भी यौन-शोषण के कई किस्से चर्चा में रहे हैं।

पुरुष वेश्यावृत्ति के मामले में भी वेटिकन सिटी घिरी हुई है। वेटिकन सिटी में पादरियों द्वारा पुरुष वेश्यावृत्ति के राज पुलिस ने खोले थे। वेटिकन धार्मिक संगीत मंडली के मुख्य गायक टामस हीमेह और पोप बेनेडिक्ट के निजी सहायक एंजलो बालडोची पर पुरुष वेश्या के साथ संबंध बनाने के आरोप लगे थे।

दुष्कर्मी पादरी भारत में भी !

यौन-शोषण के आरोपित पादरियों के नाम बदले गये। उन्हें अमेरिका-यूरोप से बाहर भेजकर छिपाया गया ताकि वे आपराधिक कानूनों के निशाने पर आने से बच सकें। खासकर अफ्रीका और एशिया में ऐसे दर्जनों पादरियों को अमेरिका-यूरोप से निकालकर भेजा गया, जिन पर बच्चों के साथ यौन-उत्पीड़न के आरोप थे। एक ऐसा ही पादरी भारत में कई सालों से रह रहा है। रेवरेंड जोसेफ फ्लानिवेल जयपाल नामक पादरी भारत में कार्यरत है। जयपाल पर एक चौदह वर्षीया किशोरी के साथ दुष्कर्म करने सहित ऐसे दो अन्य आरोप हैं। अमेरिका के एक चर्च में जयपाल ने वर्ष २००४ में एक अन्य ग्रामीण युवती के साथ बलात्कार किया था। वेटिकन और पोप की कृपा से जयपाल भागकर भारत आ गया ताकि बलात्कार की सजा से छुटकारा पाया जा सके। अमेरिकी प्रशासन को जयपाल का अता-पता खोजने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। अमेरिकी प्रशासन के दबाव में वेटिकन ने जयपाल का पता जाहिर किया। वेटिकन ने मामला आगे बढ़ता देख जयपाल को कैथोलिक चर्च से बाहर निकालने की सिफारिश की थी लेकिन भारत स्थित आर्चबिशप परिषद ने जयपाल की बर्खास्तगी रोक दी।

अमेरिकी प्रशासन जयपाल के प्रत्यर्पण की कोशिश कर रहा है क्योंकि अमेरिकी प्रशासन पर मानवाधिकारवादियों का भारी दबाव है, लेकिन जयपाल ने अमेरिका जाकर यौन-अपराधों के मामलों का सामना करने से इनकार कर दिया है।

कैथोलिक चर्च के भारतीय आर्चबिशपों द्वारा बलात्कारी पादरी जयपाल को संरक्षण देना क्या उचित ठहराया जा सकता है ? क्या भारतीय आर्चबिशपों की संरक्षणवादी नीति की आलोचना नहीं होनी चाहिए ? कथित तौर पर कुकुरमुत्ते की तरह फैले मानवाधिकार संगठनों के लिए भी जयपाल कोई मुद्दा क्यों नहीं बना ?

रंग लायेगी जनता की मुहिम

अमेरिका-यूरोप में पोप बेनेडिक्ट सोलहवें के इस्तीफे की माँग जोर से उठ रही है। जगह-जगह प्रदर्शन भी हुए हैं। इंग्लैंड सहित अन्य यूरोपीय

देशों में पोप बेनेडिक्ट सोलहवें की यात्राओं में भारी विरोध हुआ है। पोप ने अनैतिक कृत्य को संरक्षण दिया है, इसलिए वे इस्तीफा देकर पश्चात्ताप करें-ऐसा जनमत तेजी से बन रहा है। पोप के खिलाफ जनता की इच्छा शायद ही कामयाब होगी। पोप के इस्तीफे का कोई निश्चित संविधान नहीं है। इस्तीफे से जुड़े कुछ तथ्य हैं लेकिन वे स्पष्ट नहीं हैं। वर्ष १९४३ में पोप पायस बारहवें ने एक लिखित संविधान बनाया था, जिसका मसौदा था कि अगर पोप का अपहरण नाजियों ने कर लिया तो माना जाना चाहिए कि पोप ने त्यागपत्र दे दिया है और नये पोप के चयन की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है। अब तक न तो नाजियों और न ही किसी अन्य ने किसी पोप का अपहरण किया है, इसलिए पोप पायस बारहवें के सिद्धांत को अमल में नहीं लाया जा सकता। अब यह पोप पर निर्भर करता है कि वे त्यागपत्र देंगे या नहीं, पर वेटिकन सिटी की विभिन्न इकाइयों और विभिन्न देशों की कैथोलिक चर्च इकाइयों में अंदर-ही-अंदर आग धधक रही है। कैथोलिक चर्च की छवि बचाने के लिए कुर्बानी देने के सिद्धांत पर जोर दिया जा रहा है। जर्मन रोमन चर्च ने भी पोप बेनेडिक्ट सोलहवें के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। चर्च का कहना है कि वेटिकन सिटी और पोप बेनेडिक्ट ने यौन-उत्पीड़न के शिकार बच्चों और उनके परिजनों के लिए कुछ नहीं किया है।

वेटिकन सिटी में भी यौन-शोषण के शिकार बच्चों के परिजनों ने प्रदर्शन और प्रेस वार्ता कर पोप बेनेडिक्ट के आचरणों की निंदा करने के साथ-ही-साथ उन्हें न्याय का सामना करने के लिए ललकारा है।

दलदल में कैथोलिक चर्च

आर. एल. फ्रांसिस। आजकल कैथोलिक धर्मासन पर विराजमान लोग गहरी चिंता में पड़े हुए हैं। उनकी चिंता का मुख्य कारण है वर्तमान चर्च के पुरोहितों में व्याप्त यौनाचार। पुरोहितों में यौन कुंठाओं के पनपते रहने से वे मानसिक रूप से चर्च की अनिवार्य सेवाओं से मुँह मोड़ने लगे हैं। इसका असर कैथोलिक विश्वासियों में बढ़ते आक्रोश के रूप में देखा जा सकता है। विश्वासियों द्वारा चर्च की मर्यादाओं को बरकरार रखने की माँग बढ़ती जा रही है और इस आंदोलन ने अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप हासिल कर लिया है। इस आंदोलन में कैथोलिक युवावर्ग अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

अमेरिका के रोमन कैथोलिक चर्च के छः करोड़ तीस लाख अनुयायी हैं, यानी अमेरिका की कुल जनसंख्या का एक-चौथाई भाग कैथोलिक अनुयायियों का है। साथ ही यहाँ के बिशपों एवं कार्डिनलों का वेटिकन (पोप) पर सबसे अधिक प्रभाव है। जब कभी नये पोप का चुनाव होता है तो यहाँ के कार्डिनलों के प्रभाव को साफ देखा जा सकता है। यहाँ के कैथोलिक विश्वासी चर्च-अधिकारियों की कारगुजारियों के प्रति अधिक सचेत रहते हैं। वर्तमान में विश्व भर के कैथोलिक धर्माधिकारियों, पुरोहितों में तीन 'डब्ल्यू' यानी 'वेल्थ, वाइन एंड वुमेन' (सम्पत्ति, सुरा और सुंदरी) का बोलबाला है। इस प्रकार का अनाचार कैथोलिक चर्च के अंदर लगातार घर कर रहा है।

चारों ओर से सेक्स स्कैंडलों से घिरते वेटिकन ने अपने बचाव के लिए अमेरिका की यहूदी लॉबी और इस्लामिक संगठनों को अपने निशाने पर ले लिया है। अब यह प्रश्न भी उठने लगा है कि वेटिकन एक राज्य है या केवल उपासना पंथ का एक मुख्यालय ? क्यों पोप को एक धार्मिक नेता के साथ-साथ राष्ट्राध्यक्ष का दर्जा दिया जाता है ? क्यों वेटिकन 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में पर्यवेक्षक है ? क्यों वेटिकन को दूसरे देशों में अपने राजदूत नियुक्त करने का अधिकार मिला है ? क्यों वेटिकन किसी भी देश के कानून से ऊपर है।

अब समय आ गया है कि वेटिकन को अपने साम्राज्यवाद को रोककर आत्मशुद्धि की तरफ बढ़ना चाहिए। अतीत में की गयी अपनी गलतियों को मानते हुए भविष्य में उन्हें न दोहराने का कार्य करना चाहिए। अपने को राष्ट्र के बजाय धार्मिक मामलों तक सीमित रखना चहिए।

(http://in.jagran.yahoo.com/news/national/general/5_1_6377257/) ❐

ग्रीष्म ऋतु विशेष

बलवर्धक आम

ग्रीष्म ऋतुजन्य रुक्षता व दुर्बलता को दूर करने के लिए आम प्रकृति का वरदान है । पका देशी आम मधुर, स्निग्ध, वायुनाशक, बल, वीर्य, जठराग्नि व कफवर्धक, हृदय के लिए हितकारी, वर्ण निखारनेवाला, शरीर को पुष्ट व मन को संतुष्ट करनेवाला फल है। इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, लौह एवं विटामिन 'ए', 'बी', 'सी', 'डी' प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं । वृद्ध व दुर्बल लोगों के लिए देशी आम का सेवन अत्यंत गुणकारी है । वे आम के रस में थोड़ा-सा शहद मिलाकर लें, जिससे शीघ्र शक्ति मिलेगी। इसमें थोड़ा-सा अदरक का रस या सोंठ मिलाने से यह पचने में हलका हो जाता है। आम का रस पीने की अपेक्षा आम चूसकर खाना हितावह है। गाढ़े रसवाले आम की अपेक्षा पतले रसवाला देशी आम गुणकारी होता है ।

स्वास्थ्यप्रद बेल

पेट के अनेकों विकार जैसे पेचिश, दस्त, खूनी दस्त, संग्रहणी (स्प्रू), आमदोष, खूनी बवासीर, पुराना कब्ज आदि में बेल बहुत लाभदायी है। इसके फल का शरबत तथा फल के गूदे को सुखाकर बनाया गया चूर्ण उपरोक्त सभी विकारों को दूर करने में सक्षम है। बेल का शरबत मानसिक संताप, भ्रम (चक्कर आना) व मूर्च्छा को दूर करता है, शीतलता व स्फूर्ति प्रदान करता है।

बेल का शरबत बनाने की विधि : बेल के ताजे पके हुए फलों के आधा किलो गूदे को दो लीटर पानी में धीमी आँच पर पकायें। एक लीटर पानी शेष रहने पर छान लें । उसमें दो किलो मिश्री मिलाके गाढ़ी चाशनी बनाकर काँच की शीशी में भरके रख लें। चार से छः चम्मच (२० से ४० मि.ली.) शरबत शीतल पानी में मिलाकर दिन में एक-दो बार पियें।

सावधानी : पंचमी को बेल खाने से कलंक लगता है ।

गर्मियों के लिए उपहार : गन्ना

ग्रीष्म ऋतु में शरीर का जलीय व स्निग्ध अंश कम हो जाता है । गन्ने का रस शीघ्रता से इसकी पूर्ति कर देता है । यह जीवनीशक्ति व नेत्रों की आर्द्रता को कायम रखता है । इसके नियमित सेवन से शरीर का दुबलापन, पेट की गर्मी, हृदय की जलन व कमजोरी दूर होती है।

गन्ने को साफ करके चूसकर खाना चाहिए। सुबह नियमित रूप से गन्ना चूसने से पथरी में लाभ होता है। अधिक गर्मी के कारण उलटी होने पर गन्ने के रस में शहद मिलाकर पीने से शीघ्र राहत मिलती है । एक कप गन्ने के रस में आधा कप अनार का रस मिलाकर पीने से खूनी दस्त मिट जाते हैं । थोड़ा-सा नींबू व अदरक का रस मिलाकर बनाया गया गन्ने का रस पेट व हृदय के लिए हितकारी है ।

सावधानी : मधुमेह (डायबिटीज), कफ व कृमि के रोगियों को गन्ने का सेवन नहीं करना चाहिए।

विशेष ध्यान देने योग्य : आजकल अधिकांश लोग मशीन, जूसर आदि से निकाला हुआ रस पीते हैं । 'सुश्रुत संहिता' के अनुसार यंत्र से निकाला हुआ रस पचने में भारी, दाहकारी, कब्जकारक होने के साथ संक्रामक कीटाणुओं से युक्त भी हो सकता है । अतः फल चूसकर या चबाकर खाना स्वास्थ्यप्रद है।

१००% प्राकृतिक स्नान के लिए

मुलतानी मिट्टी

व्रणकुष्ठहरा फुल्लमृत्तिका चर्मदोषहृत् ।

फुल्लमृत्तिका अर्थात् मुलतानी मिट्टी त्वचा में स्थित दोषों, रोगों व व्रणों को नष्ट करनेवाली है ।

मुलतानी मिट्टी से स्नान करने से रोमकूप खुल जाते हैं । इससे जो लाभ होते हैं साबुन से उसके एक प्रतिशत भी नहीं होते । बाजार में उपलब्ध साबुनों में चर्बी, सोडाखार और कई जहरीले रसायनों का मिश्रण होता है, जो त्वचा और रोमकूपों पर हानिकारक असर करता है ।

आरोग्यता व स्फूर्ति चाहनेवालों को साबुन से बचकर मुलतानी मिट्टी से स्नान करना चाहिए ।

मुलतानी मिट्टी को पानी में घोलकर शरीर पर लगाके १०-१५ मिनट बाद नहाने से आशातीत लाभ होते हैं । यह घोल रोमकूपों को खोलकर गर्मी, मल व दोषों को बाहर खींच लेता है, जिससे कई बीमारियों से रक्षा होती है, त्वचा स्वच्छ व मुलायम बनती है ।

त्वचा अधिक चिकनी हो तो मुलतानी मिट्टी में नींबू, दही अथवा छाछ मिलाकर रखें । १० मिनट बाद शरीर पर लगाकर १०-१५ मिनट बाद नहाने से त्वचा की चिकनाहट व मैल नष्ट हो जाती है । चेहरे के कील व मुहाँसे के लिए भी यह प्रयोग लाभदायी है ।

आप सभी साबुन का प्रयोग छोड़कर मुलतानी मिट्टी से स्नान कर प्रत्यक्ष लाभ का अनुभव करें ।

मृत्तिका लगाने का मंत्र

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।
मृत्तिके हर मे पापं जन्मकोट्यां समर्जितम् ॥

'वसुंधरे ! तुम्हारे ऊपर अश्व और रथ चला करते हैं तथा वामन अवतार के समय भगवान विष्णु ने भी तुम्हें अपने पैरों से नापा था । मृत्तिके ! मैंने करोड़ों जन्मों में जो पाप किये हैं, मेरे उन सब पापों को हर लो ।' **(पद्म पुराण, उ. खंड : ४७.४३)** ❑

आँखें खोलिये, समझदार बनिये

मैं विगत १० वर्षों से मीडिया-जगत से जुड़ा हुआ हूँ । मैंने मीडिया की सच्चाई करीब से देखी है । पहले पत्रकारिता मिशन के रूप में हुआ करती थी, मगर आज यह पूरी तरह व्यवसाय बन चुकी है । आज समाचार बिकते हैं । मीडिया की स्वतंत्रता का पत्रकार खुलकर दुरुपयोग कर रहे हैं । किसी भी बड़ी हस्ती पर आरोप लगाकर उसे बदनाम कर देना इनके बायें हाथ का खेल है । सच्चाई की तह तक जाना ये बेवकूफी समझते हैं । कुछ समय पूर्व संतशिरोमणि आसारामजी बापू पर चलायी गयी आरोपों की आँधी को हवा देने के बहुत ही घृणित कार्य को टी.वी. चैनलों व अखबारों ने बखूबी अंजाम दिया था । मामले की जाँच हुई, आरोपी पकड़े गये, सारे आरोप झूठे साबित हुए । उस समाचार को इन टी.वी. चैनलों व अखबारों ने दिखाने से परहेज कर लिया, क्यों ? क्या यही है इनकी निष्पक्षता ! जी नहीं, यही है आज के मीडिया की घिनौनी हकीकत । आज पूज्य बापूजी लोगों का कितना भला कर रहे हैं ! लोग उन्हें ईश्वर मानकर पूजा करते हैं, इसके पीछे क्या है ? 'सबका मंगल, सबका भला' की सुंदर भावना है, प्रेम है; उनकी रग-रग में सच्चाई और पवित्रता है । पूरे मीडिया-जगत को आज इन महापुरुष का सम्मान करना चाहिए तथा इनके सेवाकार्यों की विस्तृत रिपोर्ट दिखाकर प्रायश्चित्त भी करना चाहिए । मैं अखबारों के समाचार व टी.वी. चैनलों की बेबुनियाद न्यूज को सच माननेवाले लोगों को आगाह करता हूँ कि आँखें खोलिये, आप भी समझदार बनिये ।

– बी. आर. सिन्हा, प्रधान सम्पादक, टेंशन टाईम्स समाचार पत्र समूह, राजनांदगांव (छ.ग.).
सम्पर्क : ९४०७७८२७३१. ❑

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

३० मार्च की पूनम एक ही दिन हरिद्वार, दिल्ली व अहमदाबाद में देकर पूज्य बापूजी ने पूनम व्रतधारियों को दर्शन-सत्संग प्रदान किया । हनुमान जयंती के पर्व के निमित्त जीवन जीने का सुंदर ढंग बताते हुए बापूजी बोले : ''रामायण में ज्ञान घाट के आचार्य भगवान शिवजी, भक्ति घाट के आचार्य काकभुशुंडिजी, कर्म घाट के आचार्य याज्ञवल्क्यजी और शरणागति घाट के आचार्य गोस्वामीजी माने जाते हैं लेकिन हनुमानजी इन चारों घाटों में निपुण हैं । चारों को समयानुसार प्रधानता देकर अपना काम कर लेते हैं । व्यवहार में भी कहीं रुआब से काम लिया जाता है तो कहीं मित्रता से, कहीं हाथाजोड़ी से तो कहीं दैन्यभाव से तो कहीं समय का इंतजार करके काम लिया जाता है । हर जगह एक ही मापदंड नहीं चलता । इस तरह कर्म, ज्ञान, भक्ति में संतुलन होना चाहिए ।''

पूज्य बापूजी का अवतरण-दिवस, ४ अप्रैल : किन्हीं उच्चकोटि के महापुरुष ने कहा है : 'संत का दर्शन-मनन सत्य का दर्शन-मनन है । संत की उपासना सत्य की उपासना है। संत की स्तुति सत्य की स्तुति है ।'

जिस मानवी श्रीविग्रह से उच्चतम ज्ञान के साथ अलौकिक प्रेम एवं निर्लिप्तता, निर्द्वन्द्वता, निर्भयता और ईश्वरीय आनंद, माधुर्य, शांति का दर्शन मिलता है, ऐसे संत-महापुरुष के इस धरातल पर आविर्भाव का दिन मानवमात्र, प्राणिमात्र के लिए निश्चय ही कल्याणकारक है । ऐसे संत का अवतरण-दिवस पर्व के रूप में मनाकर कृतज्ञता, अहोभाव प्रकट करते हुए स्वयं के संतत्व को विकसित करने का सौभाग्य साधक-भक्तों को मिला । ४ अप्रैल को लोकलाड़ले विश्वसंत परम पूज्य बापूजी का अवतरण-दिवस विश्व भर के साधकों द्वारा सेवा-साधना दिवस के रूप में मनाया गया ।

भारत भर की सभी समितियों, आश्रमों द्वारा जगह-जगह संकीर्तन यात्राएँ, गरीबों में अनाज, कपड़े, जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण, श्री आसारामायण पाठ, अस्पतालों में फल-वितरण, शहरों में जगह-जगह छाछ-शरबत वितरण, ऋषि प्रसाद व सत्साहित्य-वितरण, भंडारे आदि-आदि कई सेवा-प्रवृत्तियों द्वारा यह अवतरण-दिवस अति व्यापक स्तर पर मनाया गया । इस जन्मोत्सव को निमित्त बनाकर जन्म-मरण से पार करानेवाले सत्संग-अमृत का पान कराते हुए पूज्यश्री बोले : ''स्थूल शरीर को पता नहीं है कि मेरा जन्म होता है और आत्मा का जन्म होता नहीं । बीच में है सूक्ष्म शरीर । सूक्ष्म शरीर जिस समय जिस भाव में होता है, उस समय उसका वह जन्म माना जाता है। 'मैं पापी हूँ' तो पापमय जन्म है और 'मैं पुण्यात्मा हूँ' तो पुण्यमय जन्म है । 'मुझे कुछ समझ में नहीं आता' तो अज्ञानता का जन्म है । इससे हटके दिव्य जीवन की ओर चलो ।

कर्म होते हैं तो पंचभौतिक शरीर से होते हैं, मन की मान्यता से होते हैं; उनको जाननेवाला 'मैं' जन्म और कर्म से विलक्षण ज्ञानस्वरूप हूँ । ऐसा जाननेवाला मुक्तात्मा-महानात्मा हो जाता है । उसके जन्म-कर्म दिव्य हो जाते हैं ।''

इस दिवस को विश्व-सेवा, विश्व-मंगल का माध्यम बनाने का संदेश देते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''आज का दिवस है सेवा-दिवस; केवल सेवा नहीं सेवा-साधना दिवस । सिर्फ इतने से ही मैं संतुष्ट नहीं होता हूँ, यह दिवस सेवा-साधना-सत्संग और आत्मविश्रांति दिवस के रूप में मनाओ ।''

१२ से १८ अप्रैल तक महाकुंभ के दौरान धर्मनगरी हरिद्वार में उमड़ी धर्मप्रेमी जनता को पूज्यश्री के सान्निध्य में ध्यान-योग साधना शिविर का सुवर्ण अवसर प्राप्त हुआ । लोग धर्मलाभ के साथ भक्तिलाभ, ज्ञानलाभ से भी लाभान्वित हुए । यहाँ उपस्थित श्रद्धालुओं को बापूजी बोले : ''जब भगवद्ध्यान में साधक बैठता है तो धर्ममेघा समाधि की प्राप्ति होती है। जैसे मेघ अमाप पानी बरसाता है ऐसे ही भगवद्ध्यान में अमाप धर्मलाभ होता है ।

तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार ।
सद्गुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार ॥

जैसे मेघ अमाप पानी बरसाता है ऐसे ही सद्गुरु के सान्निध्य में ध्यान में धर्ममेघा समाधि परम धर्म-लाभ, सुख-शांति देती है। इससे विकार, वासनाएँ, अविवेक अपने-आप बह जाते हैं। जैसे खूब बरसात पड़े न, तो छोटी-मोटी नाली आदि साफ-सुथरी होने लगती हैं और सड़क पर के डीजल, गोबर के गंदे दाग भी साफ हो जाते हैं, ऐसे ही धर्ममेघा समाधि को उपलब्ध साधक की जन्म-जन्मांतर की इच्छाएँ-वासनाएँ नष्ट हो जाती हैं। वह धन्य हो जाता है, आदरणीय हो जाता है, पूजनीय हो जाता है, सुख-स्वरूप हो जाता है। वह तर जाता है, लोगों को तारने का सामर्थ्य उसके अंतःकरण में सहज में ही आ जाता है। उस आत्मविश्रांति योग में वह पहुँचता है।''

उत्तराखंड के पहाड़वासियों के भगीरथ प्रयत्न आखिरकार वहाँ पूज्य बापूजी की सत्संग-गंगा का अवतरण कराने में सफल रहे। १८ व १९ अप्रैल को कोटद्वार में बापूजी के दर्शनार्थ अपार जनसमूह उमड़ा। सत्संग की महिमा बताते हुए बापूजी ने कहा : ''तुम्हारा शरीर स्वस्थ रहे, मन प्रसन्न रहे, बुद्धि में बुद्धिदाता का प्रकाश आये, मंत्र-विज्ञान की कुंजियाँ तुम्हारी समझ में आ जायें, हम नहीं भी रहें तब भी तुम दुःख के सिर पर नाच सको, सुख का सदुपयोग कर सको, कोई भी न रहे और मौत भी आ जाय तो मौत को भी गोद में बिठाकर, बबलू बनाकर तुम ईश्वर की यात्रा कर सको इसीका नाम सत्संग है।''

१९ अप्रैल को एक ही दिन कोटद्वार, पोखरा और श्रीनगर इन तीन जगहों पर सत्संग हुआ। पोखरा पहाड़ी के बीच किसी भी सभा में इतनी भीड़ कभी नहीं हुई जो पूज्य बापूजी के सत्संग में हुई।

''हे प्रभु आनंददाता ! ज्ञान हमको दीजिये ।...
निंदा किसीकी हम किसीसे भूलकर भी ना करें ।
ईर्ष्या कभी भी हम किसीसे भूलकर भी ना करें ॥
सत्य बोलें झूठ त्यागें, मेल आपस में करें ।
दिव्य जीवन हो हमारा, यश तेरा गाया करें ॥
हे प्रभु आनंददाता !...''

यह 'परस्परं भावयन्तु' का संदेश पूज्यश्री ने दिया। स्वस्थ जीवन, 'परस्परं भावयन्तु' के भाव से भर गये प्यारे पहाड़ी। पहाड़ी जनता को जागृत करते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''पहाड़ी लोग इस जमाने की गंदी फिल्में, फास्टफूड और मोबाईल फोन से परहेज कर अपने ऊँचाइयों के अतीत को पुनः स्मरण करके उज्ज्वल भविष्य की यात्रा करें।''

श्रीनगर में उपस्थित भक्तसमूह को सफल जीवन जीने का नजरिया देते हुए बापूजी ने कहा : ''यह जगत, संसार दुःखालय है। इसमें जो सुखी रहने की कोशिश करता है वह महामूर्ख है। इसमें तो सेवा करो और सुख अंतरात्मा में लो। यह शबरी का मार्ग है। लेकिन जो लोग हिटलर, रावण, सिकंदर के मार्ग से सुखी होना चाहते हैं, वे संसार से बुरी तरह हार जाते हैं।''

२० (शाम) व २१ (सुबह) अप्रैल को टिहरीवासी सत्संग से लाभान्वित हुए। हिन्दू धर्म के रीति-रिवाजों के प्रति अनास्था बढ़ानेवालों के कुतर्कों से यहाँ की जनता को सावधान करते हुए बापूजी ने कहा : ''जो लोग बोलते हैं कि 'पहाड़ी लोग बेवकूफ हैं, बहुत भगवानों को मानते हैं, हमारा तो एक ही गॉड है', वे खुद ही मूर्ख हैं। अरे ! **स्थावराणां हिमालयः ।** भगवान कहते हैं : 'स्थावर चीजों में हिमालय मेरा स्वरूप है।' हिमालय की भूमि में, वातावरण में मन को एकाग्र करने की अपनी आभा है। दूसरा, प्राचीनकाल से संत-महात्मा, ऋषि-मुनि आदि भी हिमालय में निवास करते हैं। तीसरा, शास्त्रीय ढंग से इस भूमि को वरदान है। यहाँ जहाँ-तहाँ लोग रहते, साधना करते थे। लोग भगवान की, देव की जितनी उपासना करते हैं, उतना उनका परमात्म-तत्त्व, देवत्व प्रकट होता है। पहाड़ी क्षेत्र में बहुत लोगों का, बहुत महिलाओं का परमात्म-तत्त्व, देवत्व प्रकट हुआ, इसलिए यहाँ बहुत देवता हो गये, बहुत देवियाँ हो गयीं। इसलिए पहाड़ी-परम्परा बहुत देवी-देवताओं को मानती है। इसमें पहाड़ियों की बुद्धिमत्ता है और यह उनकी परम्परा है, धरोहर है, यह उनकी बेवकूफी नहीं है। पहाड़ियों को बेवकूफ

माननेवाले सुधर जायें, सुधरने का सीजन है।''

२४ से २८ अप्रैल तक पुनः एक बार कुंभ-नगरी हरिद्वार में श्रद्धालुओं का महाकुंभ-सा उमड़ा। यहाँ आयोजित ध्यान योग साधना शिविर में दिनोंदिन श्रद्धालुओं का महासागर उमड़ता गया और पंडाल नन्हा पड़ता गया। पूनम के दिन श्रद्धालुओं की अति विशाल जनमेदनी यहाँ उपस्थित थी। इस दौरान उत्तराखंड के मुख्यमंत्री डॉ. श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' तथा पर्यटन मंत्री श्री मदन कौशिक ने भी पूज्यश्री के आशीर्वाद प्राप्त किये। दोनों मंत्रियों के साथ आये लोग यह देखकर दंग रह गये कि लाखों-लाखों लोग कितनी शांति से बैठे हैं बापूजी के चरणों में ! बापूजी ने कहा : ''यह तो पहला दिन है, ये तो मात्र २५ प्रतिशत लोग हैं; २७-२८ तारीख को तो देशवासी और उत्तराखंड से उमड़े सज्जनों का इससे चार गुना सैलाब नजर आयेगा।''

मुख्यमंत्री पोखरियाल ने कहा : ''परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करके मैं धन्य हुआ हूँ। मैं इस देवभूमि उत्तराखंड में, देवतात्मा हिमालय व गंगा के प्रदेश में पूज्य बापूजी के चरणों में प्रणाम करता हूँ और उनका अभिनंदन करता हूँ। मैं आप सभी सत्संगियों का भी अभिनंदन और स्वागत करता हूँ, जो देश और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों से यहाँ पूज्य बापूजी के चरणों में माँ गंगा के तट पर आये हो।

पूज्य बापूजी ! आप ही के आशीर्वाद से इतना बड़ा कुंभ का कार्यक्रम बहुत ही अच्छे तरीके से सम्पन्न हुआ है। इसकी सम्पन्नता के लिए आपका आशीर्वाद, मार्गदर्शन और हर प्रकार का बल हम लोगों को मिला है। इसके लिए मैं आपके चरणों में अपना प्रणाम निवेदित करता हूँ।

वेदों का विभाजन करनेवाले भगवान वेदव्यासजी, आयुर्वेद के महान आचार्य चरक, जिन महापुरुष के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा उन भरत की तथा माँ गंगा की अवतरण-स्थली इस प्रदेश में आप बार-बार आयें और हमें आपका आशीर्वाद मिलता रहे - यह मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ। यह धरती देवभूमि है। यहाँ का जो भी संदेश आपके मुखारविंद से जायेगा वह पूरी दुनिया में जायेगा और उससे हम लोगों को ताकत मिलेगी।

एक बार पुनः उत्तराखंड सरकार एवं यहाँ की जनता की ओर से मैं आपका अभिवादन-अभिनंदन करता हूँ। आपके चरणों में प्रणाम !''

ईश्वर-विश्वास को जीवन का सम्बल बतानेवाले पूज्यश्री के ये वचन साधकों के हृदय में विवेक, विश्वास व श्रद्धा की सृष्टि कर रहे थे : ''भगवान पर भरोसा करोगे तो क्या शरीर बीमार नहीं होगा, बूढ़ा नहीं होगा, मरेगा नहीं ? अरे भाई ! जब शरीर पर, परिस्थितियों पर भरोसा करोगे तो जल्दी बूढ़ा होगा, जल्दी अशांत होगा, अकाल भी मर सकता है। **भगवान पर भरोसा करोगे तब भी बूढ़ा होगा, मरेगा लेकिन भरोसा जिसका है देर-सवेर उससे मिलकर मुक्त हो जाओगे और भरोसा नश्वर पर है तो बार-बार नाश होते जाओगे।** ईश्वर की आशा है तो उसे पाओगे व और कोई आशा है तो वहाँ भटकोगे। पतंगे का आस-विश्वास-भरोसा दीपज्योति के मजे पर है तो उसे क्या मिलता है ?'' ❐